Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 39

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

26 मुहर्रम 1441 हिजरी कमरी 26 तबूक 1397 हिजरी शमसी 26 सितम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि अल्लाह तआला की क़ुदरतों और इरादों को कोई सीमित नहीं कर सकता। इमाम फ़ख़्रउद्दीन राज़ी का यह कथन बहुत दरुस्त है कि जो आदमी ख़ुदा तआला को अक़्ल के पैमाना से अंदाज़ा करने का इरादा करेगा वह बेवक़ूफ़ है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़ुरआन शरीफ़ और तौरात की शिक्षा में दूसरा फ़र्क़

दूसरा फ़र्क़ यह है कि तौरेत ने सिर्फ बनी इस्राईल को सम्बोधित किया है और दूसरी क़ौमों से कोई सम्बन्ध और वास्ता ही नहीं रखा। और यही वजह है कि दललों तथा तर्कों पर उसने ज़ोर नहीं दिया क्योंकि तौरेत के समक्ष कोई फ़िर्क़ा नास्तिक, फलसफी और ब्रहमनों का ना था। क़ुरआन ने चूँकि सारी जातियों और फ़िर्क़ों को समक्ष रख लिया और सारी ज़रूरतें उस तक पहुंच कर ख़त्म हो गई थीं इसलिए क़ुरआन ने अक़ीदों को भी और आदेशों को व्यावहारिक रूप से तर्क पूर्ण किया।

अत: क़ुरआन फ़रमाता है قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ (अन्नूर:31) अर्थात मोमिनों से कह दे कि किसी के पर्दा को आँख फाड़ कर ना देखें और बाक़ी सारे शर्म के स्थानों की भी हिफ़ाज़त करें। अनिवार्य है कि इन्सान नीची आंख किए हो ताकि ग़ैर मुहर्रम औरत को देखकर फ़ित्ना में ना पड़े। कान भी शर्म योग्य चीज़ में दाख़िल हैं जो क़िस्से सुनकर फ़ित्ना में पड़ जाते हैं इसलिए आम तौर पर फ़रमाया कि सारे सुराख़ों को महफ़ूज़ रखो और कहा कि बिलकुल बंद रखो ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ (अन्नूर :31) यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है और यह तरीक़ा उच्च स्तर की पवित्रता रखता है जिसके होते हुए बुराकरने वालों में ना होगे।

क़ुरआन शरीफ़ दलीलों तथा तर्कों को भी ख़ुद ही वर्णन करता है

देखो! क़ुरआन ने इसी एक बात को जो तौरात में भी अपने लफ़्ज़ों और अपने अर्थ पर बयान हुआ। कैसे विस्तार के साथ और दलीलों और तर्कों के साथ बार बार ताकीद के साथ बयान फ़रमाया। यही तो कुरान का चमत्कार है कि वह अपने अनुकरण करने वालों को किसी दूसरे का मुहताज नहीं होने देता। दलील और तर्क भी ख़ुद ही बयान कर के उसे मुस्तग़नी कर देता है। क़ुरआन शरीफ़ ने दलीलों के साथ आदेशों को लिखा है और हर आदेश के अलग दलीलें दी हैं। अत: ये दो बड़े फ़र्क़ हैं जो तौरेत और क़ुरआन में हैं। अव्वल में इस्तिदलाल का तरीक़ा नहीं। दावा की दलील ख़ुद तलाश करनी पड़ती है। दूसरे में अपने दावे को हर किस्म की दलील से मुदल्लिल करता है और फिर पेश करता है और ख़ुदा के आदेश को ज़बरदस्ती नहीं मनवाता बल्कि इन्सान के मुँह से सिर झुकानें की आवाज़ निकलवाता है। ना किसी ज़बरदस्ती से बल्कि अपने लतीफ़ इस्तिदलाल के तरीक़ा से और फ़ितरत की नेकी से। तौरात का मुख़ातब ख़ास गिरोह है और क़ुरआन के मुख़ातब सारे लोग जो क़यामत तक पैदा हूँ। फिर बतलाओ कि तौरात और क़ुरआन क्योंकर एक हो जाएं और तौरात के होने से क्योंकर ज़रूरत क़ुरआन ना पड़े। क़ुरआन जब कहता है कि तू व्यभिचार ना कर तो सारी मानव जाति उस का अभिप्राय होता है लेकिन जब यही शब्द तौरात बोलती है तो इस का सम्बोधन और अभिप्राय वही क़ौम बनी इस्राईल है। इस से भी सीमित और ग़ैर फ़सीह का पता लग सकता है मगर दूर अँदेश और ख़ुदा से डरने वाला दिल हो तो।

जस्मानी और रुहानी चमत्कार

तौरात और क़ुरआन में यह भी एक बड़ा फ़र्क़ है कि क़ुरआन जस्मानी और रुहानी ख़वारिक़ हर किस्म के अपने अंदर रखता है। जैसे शक़्कुल क़मर (चान्द का फटना) का मोजिज़ा जस्मानी चमत्कार की क़िस्म से है।

क़ानून क़ुदरत की कोई सीमा नहीं हो सकती

कुछ नादान शक़्कुल क़मर के मोजिज़ा पर क़ानून क़ुदरत की आड़ में छुप कर आरोप लगाते हैं लेकिन उनको इतना मालूम नहीं कि ख़ुदा तआला की क़ुदरतों और क़ानून की सीमा और अंदाज़ा नहीं कर सकते। आह! एक वक़्त तो वे मुँह से ख़ुदा बोलते हैं लेकिन दूसरे वक़्त यद्यपि उनके दिल, उनकी रूह ख़ुदा तआला की अज़ीमुश्शान और छुपी हुई क़ुदरतों को देखकर सिज्दा में गिर पड़े। उसे सम्पूर्ण रूप से भूल जाते हैं। अगर ख़ुदा की हस्ती और सामर्थ्य यही है कि इस की क़ुदरतें और ताक़तें हमारे ही विचारों और अंदाज़ा तक सीमित हैं तो फिर दुआ की क्या ज़रूरत रही? लेकिन नहीं। मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि अल्लाह तआला की क़ुदरतों और इरादों को कोई सीमित नहीं कर सकता। ऐसा इन्सान जो यह दावा करे वह ख़ुदा का इन्कार कनरे है। लेकिन किस क़दर शोर है उस नादान पर जो अल्लाह तआला को असीमित क़ुदरतों का मालिक समझ कर भी यह कहे कि शक़्कुल क़मर का मोजज़ा क़ानून क़ुदरत के ख़िलाफ़ है। समझ लो कि ऐसा आदमी नेक फ़िक्र और दूर-अँदेश दिल नहीं रखता। ख़ूब याद रखो कि कभी क़ानून क़ुदरत पर भरोसा ना कर लो। अर्थात कहीं क़ानून क़ुदरत की हद ना ठहरा लो कि बस ख़ुदा की ख़ुदाई का सारा राज़ यही है। फिर तो सारा खेल खुल गया। नहीं। इस किस्म की दिलेरी और बहादुरी ना करनी चाहिए जो इन्सान को उबूदीयत के दर्जा से गिरा दे जिसका नतीजा हलाकत है। ऐसी बेवक़ूफ़ी और हमाक़त करना कि ख़ुदा की क़ुदरतों को सीमित और महदूद करना किसी मोमिन से नहीं हो सकती। इमाम फ़ख़्रउद्दीन राज़ी का यह कथन बहुत दरुस्त है कि जो आदमी ख़ुदा तआला को अक़्ल के पैमाना से अंदाज़ा करने का इरादा करेगा वह बेवक़ूफ़ है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-8)

इस्लाम इन्सानियत की सेवा को बुनियादी फ़र्ज़ क़रार देता है

इस हस्पताल को विशेष रूप से सिर्फ एक ही नीयत के अन्तर्गत बनाया गया है और वह नीयत सेवा इन्सानियत की है

जमाअत अपने आरम्भ से लेकर आज तक मानव जाति की सेवा करने में हमेशा सफ़ अव्वल में शुमार होती रही है

अगर मुसलमान ख़ुदा तआला की मुहब्बत प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें विशेष रूप से पहले ख़ुदा की सृष्टि की मदद करना होगी।

इस्लाम वह मज़हब है जो अपने अनुयायियों पर इन्सानियत की सेवा को बुनियादी फ़र्ज़ क़रार देता है, इसलिए यह कैसे मुम्किन है कि एक वास्तविक मुसलमान सख़्त दिल हो या तकलीफ़ वाले और मुश्किलों में घिरे हुए लोगों की मदद ना करे।

सेवा करने की कोशिशों के पीछे सिर्फ एक ही आरज़ू है कि सारी मानव जाति की तकलीफ़ और दुख को दूर किया जाए यही वजह है कि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट आज दुनिया के इस हिस्सा में अपना पहला हस्पताल खोल रही है।

आप यक़ीन रखें कि इस हस्पताल के द्वारा जो भी फ़ंडज़ इकट्ठे होंगे, वे ग्वेटामाला के लोगों की और अधिक सेवा के लिए प्रयोग होंगे और एक पाई भी ग्वेटामाला से बाहर नहीं भिजवाई जाएगी

नासिर हस्पताल (ग्वेटामाला) के उद्घाटन के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

23 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक मंगल) (शेष.....)

नासिर हस्पताल के संक्षिप्त कवाइफ़

*27 अक्तूबर 2015 ई को नासिर हस्पताल के लिए ज़मीन ख़रीदी गई। जिसका क्षेत्रफल 8788 मुरब्बा फुट है।

*यह हस्पताल मस्जिद बैतुल अव्वल से 17 किलोमीटर के दूरी पर स्थित है।

19 अप्रैल 2016 ई को नासिर हस्पताल की बुनियाद के सिलसिला में ग्वेटामाला की एक तामीर करने वाली कंपनी के साथ मुआहिदा किया गया।

*इस हस्पताल की बुनियाद और पूर्ण तैय्यारी पर 2.8 मिलियन डॉलर्ज़ के खर्चे आए हैं।

*नासिर हस्पताल में ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से दो Wings हैं जिनके अन्तर्गत कई विभाग हैं:

Out Patient Wing के अन्तर्गत विभाग Gynaecology, Radiology, Paediatrics, Internal Medicine इसी तरह Ophthalmology की सहूलियतें उपलब्ध हैं।

Medical Diagnosis Centre भी मौजूद है। एक पूर्ण Clinical Laboratory स्थापित की गई है जिसके साथ ब्लड बैंक भी है।

इसी तरह Proctology,Immunology, Haematology, Serology और Urine Test की सहूलतें भी उपलब्ध हैं। X-Ray और Ultrasound का अलग विभाग है। Electro Cardiagram की सुविधा भी मौजूद है।

In-Patient Wing के अन्तर्गत एक Emergency का विभाग है। Maternity का अलग विभाग है जहां पोस्टमार्टम, Intensive Care और Neonatal सहूलतें उपलब्ध की जाएँगी। इसी तरह सर्जरी का अलग विभाग है। Intensive Care Unit भी मौजूद है।

हस्पताल में चौबीस कमरे, तीन इंतिज़ार करने के स्थान हैं, एक Open Air Auditorium, चार गार्डनज़ (Gardens), कोलेक्शन सैंटर (Collection Center), एक पानी का कुँआं, एक पानी का टैंक जिसकी गुंजाइश 40 बैरल है, सीवरज के लिए प्लांट, मैडीकल गैस कुआटर, एक बिजली का प्लांट और ट्रांसफ़ार्मर शामिल है।

निक़ाब उठाने के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नासिर हस्पताल का निरीक्षण फ़रमाया। सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ Reception के क्षेत्र में तशरीफ़ ले आए। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने डेंटल डिपार्टमैंट का निरीक्षण फ़रमाया। यहां भी नवीन यूनिट लगाए गए हैं। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने अल्ट्रा साऊँड विभाग (UltraSound) और X-Ray विभाग और लीबारटरी का निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने फार्मेसी का निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने एमरजैंसी विभाग और आई सी यू का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर लेबर रूम और लेबर वार्ड में भी तशरीफ़ ले गए और सारी सहूलतों का जायज़ा लिया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने आप्रेशन थियहटर और ऑप्रेटिंग रुम का निरीक्षण फ़रमाया। इन सभी जगहों पर नवीन मशीनरी और सहूलतें मुहय्या की गई हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर जनरल वार्ड में तशरीफ़ ले गए और इस में मौजूद सहूलतों का निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने हस्पताल के किचन, दफ़तरों, ऐडमिनिस्ट्रेशन ऑफ़िस बलॉक का निरीक्षण फ़रमाया। इस तफ़सीली निरीक्षण के बाद ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के डायरेक्टर्ज़ ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाई। इस के बाद हस्पताल में काम करने वाले डाक्टर्ज़ और फिर लेडी डाक्टर्ज़ ने ग्रुप फ़ोटोज़ बनवाईं।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ इस बड़ी मार्की में तशरीफ़ ले आए जहां हस्पताल की उद्घाटन का आयोजन किया जा रहा था। हुज़ूर अनवर की आने से पहले इस आयोजन में शामिल होने वाले सारे मेहमान अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ चुके थे।

चार बज कर दस मिनट पर प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो डाक्टर ख़ालिद मिन्हास साहिब ने की। इस के बाद उस का स्पेनिश ज़बान में अनुवाद Yussef Randhu Morales साहिब ने पेश किया।

इसके बाद ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमरीका के चेयरमैन आदरणीय मुनइम नईम साहिब ने परिचयात्मक सम्बोधन पेश किया। महोदय ने दुनिया के विभिन्न देशों में ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट की विभिन्न क्षेत्रों में ख़िदमतों और प्रोग्रामों का ज़िक्र किया और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के स्थापना का इतिहास भी बताया। आख़िर पर ग्वेटामाला में नासिर हस्पताल के स्थापना और इस का क्रम से बुनियाद और खर्चों के

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मस्जिद वही हक़ीक़ी है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर हो

हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारी मस्जिदें तक़्वा की बुनियाद पर हों

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति आंहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि , हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि और हज़रत मअन बिन अदी रज़ी अल्लाह अन्हुमा की सीरत मुबारका का दिल-नशीं वर्णन

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से मस्जिद ज़िरार के गिराए जाने का हुक्म और इस की पृष्ठभूमि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह अन्हो के इंतिख़ाब ख़िलाफ़त का तफ़सीली वर्णन

अल्लाह तआला हर अहमदी को भी नबुव्वत के मुक़ाम को पहचानने की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और ख़िलाफ़त के साथ वफ़ा और इख़लास का सम्बन्ध पैदा करने की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 अगस्त 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफोर्ड (सिरे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के ज़िक्र में आज मैं जिन सहाबी का ज़िक्र करूँगा उनका नाम है हज़रत आसिम बिन अदी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो। हज़रत आसिम रज़ि के पिता का नाम अदी था। उनका सम्बन्ध क़बीला बनू अजलान बिन हारिसा से था जो क़बीला बनू ज़ैद बिन मालिक का हलीफ़ था। हज़रत आसिम रज़ि बनू अजलान के सरदार और हज़रत मअन बिन अदी रज़ि के भाई थे।

हज़रत आसिम रज़ि की कुनिय्यत अबूबकर वर्णन की जाती है जबकि कुछ के नज़दीक उनकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह, अबू उम्र और अबू अमरो भी थी। हज़रत आसिम रज़ि दरियाने क़द के थे और बालों पर मेहंदी लगाया करते थे। हज़रत आसिम रज़ि के बेटे का नाम अबुल बद्दाह था

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 354-355 आसिम बिन अदी प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 111 आसिम बिन अदी प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत आसिम रज़ि की बेटी का नाम सहला था जिसकी शादी हज़रत अब्दुर्र रहमान बिन औफ़ रज़ि के साथ हुई और उनके इस शादी से चार बच्चे थे तीन बेटे :मअन, उम्र, ज़ैद और एक बेटी अमतुर्रहमान सुग़रा

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 94 अब्दुर्र रहमान बिन औफ़, प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब बदर की तरफ़ रवाना होने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि को क़बा और मदीना के ऊपर वाले हिस्सा "आलीया' पर अमीर निर्धारित फ़रमाया। एक रिवायत में यह भी आता है कि रोहा स्थान से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आसिम रज़ि को मदीना के ऊपर वाले हिस्से आलीया पर अमीर निर्धारित करते हुए वापिस भेज दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आसिम रज़ि को वापिस भिजवाया लेकिन आप को अस्हाब बदर में शुमार किया और उनके लिए अम्वाले ग़नीमत में से भी हिस्सा फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 355 आसिम बिन अदी प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 463 आसिम बिन अदी प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में इस घटना की तफ़सील इस तरह वर्णन हुई जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखी है कि "मदीना से निकलते हुए आप ने अपने पीछे अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि को मदीना का अमीर निर्धारित किया था। मगर जब आप रोहा के क़रीब पहुंचे जो मदीना से 36 मील की दूरी पर है तो शायद इस ख़्याल से कि अब्दुल्लाह एक अन्धे आदमी हैं और लश्कर क़ुरैश के आने की ख़बर का तक़ाज़ा है कि आप के पीछे मदीना का इंतिज़ाम मज़बूत रहे आप ने अबुल बाब: बिन मुंज़र को मदीना का अमीर निर्धारित कर के वापिस भिजवा दिया और अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम के बारे में हुक्म दिया कि वह सिर्फ़ नमाज़ के इमाम रहें। मगर इंतिज़ामी काम अबुल बाब: सरअंजाम दें। मदीना की ऊपरी आबादी अर्थात क़बा के लिए आप ने आसिम बिन अदी को अलग अमीर निर्धारित फ़रमाया।"

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 354)

हज़रत आसिम रज़ि जंग उहद और जंग ख़ंदक़ सहित समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। हज़रत आसिम रज़ि ने 45हिज्री में हज़रत मुआविया रज़ि के दौर हकूमत में मदीना में वफ़ात पाई। इस वक़्त उनकी उम्र115 साल थी। कुछ के नज़दीक उन्होंने120 साल की उम्र में वफ़ात पाई। जब हज़रत आसिम रज़ि की वफ़ात का वक़्त आया तो उनके घर वालों ने रोना शुरू किया इस पर उन्होंने कहा कि मुझ पर ना रोओ क्योंकि मैंने तो अपनी उम्र गुज़ार ली।(अत्तबकात जिल्द 3 पृष्ठ 355 आसिम बिन अदी प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत1990 ई)(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 464 आसिम बिन अदी प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)और बहुत लंबी उम्र गुज़ार ली

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सहाबा किराम को जंग तबूक की तैयारी के लिए हुक्म दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमीरों को अल्लाह की राह में माल और सवारी मुहय्या करने की तहरीक भी फ़रमाई और इस पर विभिन्न लोगों ने अपनी अपनी हैसियत के अनुसार क़ुर्बानी पेश की। इसी अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ि अपने घर का सारा माल ले आए जो कि चार हज़ार दिरहम थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ि से पूछा फ़रमाया कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है कि नहीं? तो उन्होंने अर्ज़ किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और इस का रसूल छोड़ आया हूँ । हज़रत उमर रज़ि अपने घर का आधा माल लेकर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ि से दरयाफ़त किया कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ के आए हो? तो उन्होंने अर्ज़ किया कि आदा छोड़ कर आया हूँ । इस अवसर पर हज़रत अब्दुर्र रहमान बिन औफ़ रज़ि ने एक सौ औक़िया दिए। एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसमान बिन औफ और अब्दुर्र रहमान बिन औफ़ रज़ि ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से खज़ाने हैं जो अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करते हैं । इस अवसर पर औरतों ने भी अपने ज़ेवरात पेश किए। इसी अवसर पर हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि, जिनका ज़िक्र हो रहा है उन्होंने सत्तर वसक खजूरें पेश कीं। एक वसक में साठ साअ होते हैं और एक साअ तक़रीबन अढ़ाई सैर का होता है, या अढ़ाई किलो का तो इस तरह ख़जूरों का वज़न 262 मन बनता है

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 183-184 ग़ज़वा तबूक प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2002 ई)

(लुग़ातुल हदीस जिल्द 1 पृष्ठ 82 ''औक़िया' जिल्द 4 पृष्ठ 487 ''वसक''। जिल्द 2 पृष्ठ 648 ''साअ' नाशिर नुअमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई)

एक मन तक़रीबन चालीस सेर का पाकिस्तान का वज़न है या उनतालिस किलो का या अड़तीस किलो का होता है। बहरहाल हज़रत आसिम रज़ि ने भी इस अवसर पर जो उन के पास खजूरें थीं वे पेश कीं और बड़ी संख्या में पेश कीं। हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि इन सहाबा में से थे जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद ज़िरार गिराने का हुक्म दियाथा। इस घटना की तफ़सील इस तरह वर्णन हुई है

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से रिवायत है कि बनू अमरो बिन औफ़ ने मस्जिद क़बा बनाई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ पैग़ाम भेजा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाएं और इस में नमाज़ पढ़ें । जब बनू ग़नम बिन औफ़ के कुछ लोगों ने इस मस्जिद को देखा तो उन्होंने कहा कि हम भी एक मस्जिद बनाते हैं जैसे बनू अमरो ने बनाई है तो उनको अबू अमरो फ़ासिक़ जो बड़ा मुख़ालिफ़ था। यह फ़ित्ना पैदा करने वाला था। उसने कहा कि तुम भी एक मस्जिद बनाओ और यथा शक्ति इस में हथियार भी जमा करो। इस की नीयत यह थी कि इस को फ़ित्ने का मर्कज़ बनाया जाए। कहने लगा कि मैं रुम के बादशाह क़ैसर के पास जा रहा हूँ और वहां से एक रूमी लश्कर लाऊँगा। फिर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस के साथियों को यहां से निकाल दूँगा

जब मस्जिद मुकम्मल हो गई तो उनके लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि हमने यह मस्जिद बीमारों और असहायों की आसानी के लिए बनाई है कि वे ज़्यादा दूर नमाज़ पढ़ने नहीं जा सकते और साथ ही आप से यह भी दरख़ास्त की कि इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए तशरीफ़ लाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं इस वक़्त सफ़र की तैयारी में व्यस्त हूँ। सफ़र पर जा रहे थे, इंशा अल्लाह जब हम वापस आएँगे तो मैं नमाज़ पढ़ाऊंगा। यह जंग तबूक का सफ़र था। जंग तबूक से वापसी पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीने से थोड़े फ़ासले पर एक जगह ज़ी आवान, उस के और मदीना के दरमयान एक घंटे की दूरी है वहां क़ियाम फ़रमाया तो आप को मस्जिद ज़िरार के बारे में यह वह्य नाज़िल हुई जिसका क़ुरआन शरीफ़ में सूरह तौब: में वर्णन है

वाल्लज़ीन अत्तख़ज़ूओ़ा मस ज़र अन्हो व्वकुफ़ुना व्वतफ़रीन□ा बे अल व्यर् ल्लिमन् हुअरब अलल्लाए वरसूओ मिन् कब वलयहूलिफ़ुन्न इन उर्द ए-ए-लिऐ अल वालल्लाएउ यश इन्नेउम् (अत्तौबा:107)

और वे लोग जिन्होंने तकलीफ़ पहुंचाने और कुफ़्र फैलाने और मोमिनों के दरमयान फूट डालने और ऐसे शख़्स को कमीन गाह मुहय्या करने के लिए जो अल्लाह और इस के रसूल से पहले ही लड़ाई कर रहा है एक मस्जिद बनाई है ज़रूर वे क़समें खाएँगे कि हम भलाई के सिवा कुछ नहीं चाहते थे जबकि अल्लाह गवाही देता है कि वे यक़ीनन झूठे हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के बाद मालिक बन दख़शम और मअन बिन अदी को बुलाया और उनको मस्जिद ज़िरार गिराने का हुक्म दिया। कुछ रिवायतों में यह भी है कि हज़रत आसिम बिन अदी और अमरो बिन स्किन और वहशी, जिसने हज़रत हमज़ह रज़ि को शहीद किया था और सुवेद बिन अब्बास को भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस मक़सद के लिए भेजा। शरह जरक़ानी में यह भी लिखा है कि मुम्किन है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले दो लोगों को भिजवाया हो फिर और अधिक चार लोग उनकी सहायता के लिए भिजवाए हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मस्जिद ज़िरार की तरफ़ जाने का इरशाद फ़रमाया कि उसे गिरा दें और आग लगा दें। यह कहते हैं कि ये सब लोग तेज़ी से क़बीला बनू सालिम पहुंचे जो कि हज़रत मालिक बन दख़शम का क़बीला था। हज़रत मालिक बन दख़शम रज़ि ने हज़रत मअन रज़ि से कहा कि मुझे कुछ मोहलत दो यहां तक कि मैं घर से आग ले आऊँ। अत: वे घर से खजूर की सूखी टहनी को आग लगा कर ले आए। फिर वे मग़रिब और इशा के दरमयान मस्जिद ज़िरार के पास पहुंचे और वहां जा कर उसे आग लगा दी और इस को ज़मीन में मिला दिया। यह कुछ हिस्सा मैंने पहले हज़रत मालिक बन दख़शम के अन्तर्गत में वर्णन किया था। बहरहाल उस वक़्त इस मस्जिद के बनाने वाले वहां मौजूद थे लेकिन आग लगने के बाद वे इधर उधर भाग गए। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये मस्जिद वाली जगह आसिम बिन अदी को देनी चाही कि वह इस जगह को अपना घर बना लें (जिन सहाबी का ज़िक्र हो है)काफ लेकिन आसिम बिन अदी रज़ि ने कहा कि मैं जगह नहीं लूँगा। इसलिए अमसर्थता की कि इस के बारे में अल्लाह तआला ने जो वह्य नाज़िल करनी थी कर दी अर्थात कि यह तो ऐसी जगह बनी है जो अल्लाह तआला को इस की इमारत वहां पसंद नहीं आई थी इसलिए मैं नहीं चाहता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फिर साबित बिन अकरम को दे दिया क्योंकि उनके पास कोई घर नहीं है। हाँ आसिम बिन अदी रज़ि ने कहा कि मेरे पास घर भी है और मुझे इन्क़िबाज़ भी हो रहा है। क्षमा चाहता हूँ। बेहतर यह है कि उसे साबित बिन अकरम को दे दें और वजह यह है कि उनके पास घर नहीं। वह यहां अपना घर बना लेंगे। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह मस्जिद, मस्जिद ज़िरार वाली वह जगह जो थी साबित बिन अकरम को दी।

इब्न इसहाक़ के अनुसार मस्जिद ज़िरार बनाने वाले मुनाफ़क़ीन के नाम ये हैं । ख़िज़ाम बिन ख़ालिद, मअतब बिन कशीर, अबू हबीब बिन अज़अर, इबाद बिन हुनीफ़ , जारीया बिन आमिर और इस के दोनों बेटे मुजम्मअ बिन जारीया और ज़ैद बिन जारीया , नफ़ील बिन हरस, बहरज बिन उसमान ,वदीअ:। तो बहरहाल ये लोग थे जो अबू आमिर रहब जिसका नाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ासिक़ रखा था उस के साथ ये सब मिले हुए थे।

(सुबुलुल हुदा वर्शाद जिल्द 5 पृष्ठ 470 से 472 ग़ज़वा तबूक प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत1993 ई)(शरह अज़्ज़र्कानी अला अलमवाहेबुल लुदिनया भाग 4 पृष्ठ 97-98 सुम्मा ग़ज़व तबूक। दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत1996 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी एक बार दिल्ली के सफ़र पर जब गए तो दिल्ली की जामा मस्जिद को देखकर फ़रमाया बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद है लेकिन फ़रमाया कि''मस्जिदों की असल सुन्दरता इमारतों के साथ नहीं है बल्कि उन नमाज़ियों के साथ है जो इख़लास के साथ नमाज़ पढ़ते हैं ।' फ़रमाया कि ''वर्ना ये सब मस्जिदें वीरान पड़ी हुई हैं ।' उस ज़माने में बहुत सारी मस्जिदें थीं,वीरान थीं । ''रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद छोटी सी थी।' आप ने फ़रमाया ''खजूर की छड़ियों से इस की छत बनाई गई' शुरू में ''और बारिश के वक़्त (मस्जिद की छत में से पानी टपकता था।' फ़रमाया कि ''मस्जिद की रौनक नमाज़ियों के साथ है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त में दुनियादारों ने एक मस्जिद बनवाई थी। वह ख़ुदा तआला के हुक्म से गिरा दी गई। इस मस्जिद का नाम मस्जिद ज़िरार था। यानी नुकसान पहुंचाने वाली। इस मस्जिद की ज़मीन मिट्टी के साथ मिला दी गई थी। मस्जिदों के लिए हुक्म है।' आप ने फ़रमाया कि मस्जिदों के वास्ते यह हुक्म है ''कि तक़्वा के लिए बनाई जाएं ।' (मलफ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 170)

अत: यह है मस्जिद की असल हक़ीक़त। आजकल मुस्लमानों के एक वर्ग का मस्जिदों की आबादी की तरफ़ भी रुजहान हुआ है और अजीब बात यह है कि यह रुजहान भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम की बिअसत के बाद हुआ है। अगर कुछ अवसर पैदा हुआ, जुर्रत पैदा हुई या इबादत की तरफ़ तवज्जा हुई या ज़ाहिरी इबादत की तरफ़ तवज्जा हुई तो यह भी आप के दावा के बाद ही है। लेकिन इस के बावजूद बड़ी तवज्जा से मस्जिदें बनाते हैं और मस्जिदें भी बड़ी ख़ूबसूरत बनाते हैं और आजकल खासतौर पर पाकिस्तान इत्यादि में उनकी आबादी की तरफ़ भी कुछ लोगों ने तवज्जा की है लेकिन यह तक़्वा से ख़ाली मस्जिदें हैं। अल्लाह तआला ने मस्जिद ज़िरार को गिराने का जो हुक्म फ़रमाया था उस के आगे आयतों में यह भी बड़ा वाज़िह फ़रमाया था कि मस्जिद वही हक़ीक़ी है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर हो लेकिन इन ग़ैर अहमदी उल्मा ने अपनी सोच में तक़्वा सिर्फ इसी बात को समझ लिया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम के ख़िलाफ़ मस्जिदों में खड़े हो के उपहास किया जाए। गंदी और अभद्र भाषा आप के बारे में इस्तिमाल की जाए, जमाअत को गालियां दी जाएं और फिर सिर्फ यही नहीं है बल्कि आए दिन ये घटनाएं होती हैं कि इन मस्जिदों की इमामत और फ़िर्क़ों के इख़तिलाफ़ की वजह से आपस में भी उनकी गालम ग्लोच रहती है। अब तो अक्सर घटनाएं वाइरल होती रहती हैं कि मस्जिदों में दंगा फ़साद हो रहा है या एक दूसरे को गालियां दी जा रही हैं। अत: ये सब बातें बताती हैं कि उनमें तक़्वा की कमी है और उनकी मस्जिदों में मस्जिद का हक़ीक़ी रंग जो हक़ है वह अदा नहीं हो रहा और उनके कर्म जो हैं उनसे हम अहमदियों को भी सबक़ लेना चाहिए और हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारी मस्जिदें तक़्वा की बुनियाद पर हों। अत: हम तक़्वा को सामने रखते हुए इन मस्जिदों को आबाद करने के लिए आएं । अत: यही असल हक़ीक़त है। अगर यह क़ायम रहेगी और जब तक क़ायम रहेगी उस वक़्त तक इंशा

अल्लाह तआला अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के भी वारिस बनते रहेंगे

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं कि। لِمَنۡ حَارَبَ اللّٰهَ इस की व्याख्या फ़रमाते हैं कि "यह अबू आमिर की तरफ़ इशारा है जो ईसाई था। इस के षडयन्त्रों से एक षडयन्त्र यह भी था कि रसूल करीम इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ लें। फिर कुछ मुस्लमान इधर भी आ जाया करें और इस तरह मुस्लमानों की जमाअत को तोड़ लूँगा। इस अबू आमिर ने अपना एक रोआ भी पैला रखा था कि मैंने देखा है कि नबी करीम .....

अर्थात कि धुतकारे हुए (नऊज़-बिल्लाह तन्हा)" फ़ौत होंगे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की यह बात सुनकर "फ़रमाया कि ख़्वाब सच्चा है।' यह ठीक कहता है। असल में बात ये है कि इसलिए सच्चा है कि "उसने अपनी हालत देखी है अत: ऐसा ही हुआ। आप ने नाम नहीं लिया और इस के बारे में लिखते हैं कि ये नाम ना लेने में असल में।' यह बलाग़त है कि भविष्य में भी अगर कोई ऐसा करेगा तो इस का अंजाम भी यही होगा।

(हक़ायक़ुल फ़ुर्कान जिल्द 2 पृष्ठ 310 ज़ेर आयत वाल्लज़ीन अत्तख़ज़ूओ़ा मस ज़र अन्हो)

और फिर हम देखते हैं कि आज भी ऐसे ही दुश्मनों के अन्जाम होते चले आ रहे हैं।

दूसरे सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि है। हज़रत अमरो रज़ि का नाम अमीर भी मिलता है और पिता का नाम औफ़ था। हज़रत अमरो रज़ि की कुनिय्यत अबू अमरो थी। उनका जन्म मक्का में हुआ और इब्ने साद के अनुसार यह यमन से थे

(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाब: ले इब्न हिज्र असकलानी जिल्द 4 पृष्ठ 553-552 अमरो बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लुबनान2005ए-) (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद 'अमरो बिन औफ़ जुज़-ए-3 पृष्ठ 254 दारुलफ़क्र बेरूत लबनान 2012 ई)

अर्थात यमन के रहने वाले थे। इतिहासकारों ने और सीरत लिखने वालों ने और मुहद्दिसीन ने इन सहाबी के नाम के बारे में विभिन्न राय दी हैं और उनके बारे में बहुत ज़्यादा मतभेद पाया जाता है। अत: इमाम बुख़ारी, इब्न इसहाक़, इब्न साद, अल्लामा इब्ने अब्दुल बिर्र, अल्लामा इब्न असीर जज़री इत्यादि ने उनका नाम अमरो वर्णन किया है जबकि इब्न हिशाम, मूसा बिन उक़बा, अबू मअशर मुहम्मद बिन उम्र वाक़दी इत्यादि ने उनका नाम अमीर वर्णन किया है। अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी और अल्लामा इब्न हिज्र असकलानी ये दोनों सही बुख़ारी के शारह भी हैं। उनकी व्याख्या लिखी है उनके अनुसार अमरो बिन औफ़ और अमीर बिन औफ़ दोनों ही एक शख़्स के नाम हैं।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद "उमैर बिन औफ़' जिल्द 3 पृष्ठ 310 जिल्द 4 पृष्ठ 269 प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई) (अल्इस्तेयाब फ़ी मारफ़तुल असहाब जिल्द 3 पृष्ठ 274 अमरो बिन औफ़ अल्अन्सारी दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2002 ई)(उम्दतुल क़ारी भाग 15 पृष्ठ 121 किताब अलजिज़या दारा अहया अत्तुरासा बेरूत लबनान 2003 ई)

(अलासाबा फ़ी तमीईज़स्सहाबा ले इब्न हिज्र असकलानी जिल्द 4 पृष्ठ 552-553 अमरो बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2005 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 4 पृष्ठ 246 अमरो बिन औफ़ प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)(इब्न हिशाम पृष्ठ 463 वमन बनी आमिर प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001ई)

इमाम बुख़ारी के अनुसार हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि अन्सारी क़ुरैश के क़बीला बनू आमिर बिन लूई के हलीफ़ थे जबकि इब्न-हिशाम और इब्न साद ने उन्हें क़ुरैश के ख़ानदान बनू आमिर बिन लूई से क़रार दिया है। अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी जो बुख़ारी के शारह हैं उन्होंने उस की समानता की है। इस को (दोनों विभिन्न वर्णनों को इस तरह उस के साथ आपस में मिलाया है कि कहते हैं कि हक़ीक़त में हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि अन्सार के क़बीला ओस या ख़ज़रज में से थे और उन्होंने मक्का जा कर क़ियाम किया था और वहां कुछ लोगों के हलीफ़ हुए थे और इस एतबार से वह अन्सारी भी हुए और मुहाजिर भी हुए।

(सही बुख़ारी किताब अलजियाह हदीस नम्बर 3158)(उम्दतुल क़ारी भाग 15 पृष्ठ 121 किताबुल जिज़या दारे अहया अत्तुरास बेरूत। लबनान 2003 ई) (इब्न हिशाम पृष्ठ 463 वुमन बनी आमिर प्रकाशन दारुल-कुतुब बेरूत 2001ई) (अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 310 अमीर बिन औफ़ प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि बहुत पहले इस्लाम क़बूल करने वालों में से थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 254 अमरो बिन औफ़ प्रकाशन दारुलफ़क्र बेरूत 2012 ई)

हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि ने मक्का से हिजरत मदीना के वक़्त क़बा में हज़रत कुलसूम बिन अलहदम रज़ि के यहाँ निवास किया

हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि जंग बदर, जंग उहद, जंग ख़ंदक़ और इस के अतिरक्त अन्य समस्त जंगों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद 'उमैर बिन औफ़ भाग 3 पृष्ठ 217 दार अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 1996 ई)(अलअसाबा जिल्द 3 पृष्ठ 46 साद बिन ख़ेसमा प्रकाशन दारुल-कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत अमरो बिन औफ़ रज़ि की वफ़ात हज़रत उमर रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में हुई और उनकी नमाज़ जनाज़ा हज़रत उमर रज़ि ने पढ़ाई।

(अलासाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्न हिज्र असकलानी जिल्द 4 पृष्ठ 553 अमरो बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2005 ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत मअन बन अदी रज़ि है। हज़रत मअन रज़ि अन्सार के क़बीला बनू अमरो बिन औफ़ के हलीफ़ थे

(इब्न हिशाम पृष्ठ 29 अस्मा मन शहद अल-उकबा प्रकाशन दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

हज़रत मअन रज़ि हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि के भाई थे। इस हवाले से पहले उनका ज़िक्र हो चुका है। हज़रत मअन रज़ि सत्तर अन्सार के साथ बैअत उक़बा में शामिल हुए। हज़रत मअन रज़ि इस्लाम क़बूल करने से पहले अरबी में लिखना जानते थे, पढना लिखना जानते थे। जबकि उस वक़्त अरब में पढ़ना लिखना बहुत कम थी। हज़रत मअन रज़ि जंग बदर, उहद और ख़ंदक़ सहित समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि ने मक्का से मदीने हिज्रत की तो उस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मअन बिन अदी रज़ि और हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि के दरमयान भाईचारा स्थापित फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद जिल्द 3 पृष्ठ 244-245 मअन बन अदी दारुल अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 1996 ई)

हज़रत उमर रज़ि वर्णन करते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हुए तो मैंने हज़रत अबू बकर रज़ि से कहा कि आप हमारे भाई अन्सार के पास हमारे साथ चलें। अत: हम गए और उनमें से दो नेक आदमी हमें मिले जो बदर में शरीक हुए थे। मैंने उर्वा बिन ज़ुबैर से वर्णन किया तो उन्होंने कहा कि वे हज़रत उवैम बिन साइदह रज़ि और हज़रत मअन बिन अदी रज़ि थे।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब शहूद अलमलायक बदरन हदीस 4021)

रावी ने आगे जो लिखा है, हज़रत उमर रज़ि की जो रिवायत अभी वर्णन हुई है इस का और अधिक विस्तार बुख़ारी की एक और रिवायत में भी दर्ज हैं जिसका कुछ हिस्सा मैं पेश करता हूँ।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं मुहाजिरीन में से कई लोगों को क़ुरआन पढ़ाया करता था। उन में से अब्दुर्र रहमान बिन औफ़ रज़ि भी थे। एक-बार में उनके इस घर में था जो मिना में है और वह उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि के पास गए हुए थे। यह घटना इस आख़िरी हज की है जो हज़रत उमर रज़ि ने किया था। जब अब्दुर्र रहमान बिन औफ़ रज़ि मेरे पास वापस लौट कर आए तो उन्होंने कहा काश तुम भी इस शख़्स को देखते जो आज अमीरुल मोमनीन के पास आया और कहने लगा कि अमीरुल मोमनीन क्या आप को अमुक हुक्म के अनुसार इलम हुआ कि जो कहता है कि अगर उमर रज़ि गए तो मैं अमुक की बैअत करूँगा अर्थात पहले ही बता रहा है हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के वक़्त मैं कि आप के बाद फिर मैं अमुक की बैअत करूँगा और फिर उसने कहा कि अल्लाह की क़सम! अबू बकर रज़ि की बैअत तो यूँही अफ़रातफ़री में हो गई थी। फिर यह ही नहीं कि अगली का इज़हार कर दिया बल्कि यह भी इज़हार कर दिया कि हज़रत अबूबकर रज़ि की बैअत नऊज़-बिल्लाह अफ़रातफ़री में ग़लती से हो गई थी और इस तरह उनकी ख़िलाफ़त का वह मुक़ाम उनको मिला। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि दुखी हुए। फिर उन्होंने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं आज शाम लोगों में खड़ा होऊंगा

और उन्हें उन लोगों से चौकस करूँगा जो उनके मामलों को ज़बरदस्ती अपने हाथ में लेना चाहते हैं। अब्दुर्रहमान रज़ि कहते हैं कि मैंने कहा कि अमीरुल मोमनीन ऐसा ना करें क्योंकि हज में साधारण लोग और ओबाश भी इकट्ठे हुए होते हैं तो जब आप लोगों में खड़े होंगे तो यही लोग ज़बरदस्ती आप के क़रीब हो जाऐंगे, इकट्ठे हो जाऐंगे और मैं डरता हूँ कि कहीं आप खड़े हो कर ऐसी बात ना कह दें कि हर बात उड़ाने वाला आप के बारे में कुछ और का और ना उड़ा दे। अपनी तरफ़ से बातें लगा के कुछ और वही मशहूर ना कर दे और लोग उसे ना समझें और ना ही मुनासिब स्थान पर उसे लगांए। समझ भी ना आए और फिर सही अवसर पर इस को लगा भी ना करें। इस की वज़ाहत भी ना हो सके। फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ि को मश्वरा दिया कि आप उस वक़्त तक इंतिज़ार करें कि मदीने में पहुंचें। हज के दिन थे। मदीने पहुँचेंगे तो क्योंकि वह हिज्रत और सुन्नत का मुक़ाम है। वहां क्या होगा कि समझदार और शरीफ़ लोगों को अलग-थलग लेकर जो आप ने कहना हो उन्हें इत्मीनान से कहें। और कहा कि मैंने कहा कि अहल इलम आप की बात समझेंगे और मुनासिब स्थान पर उसे लगा भी देंगे। अपनी अपनी तशरीहें नहीं करने लग जाऐंगे। फिर हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि अच्छा ठीक है। अल्लाह की क़सम इंशा अल्लाह पहली बार जो मदीने में ख़ुत्बा के लिए खड़ा हूँगा तो फिर मैं वहां जाते ही यह बात वर्णन करूँगा। इब्न अब्बास रज़ि कहते हैं कि हम मदीना ज़ी अल्हज्जा के अन्त में पहुंचे और जब जुम्अ: का दिन हुआ तो जैसे ही सूरज ढला और जुम्अ: का वक़्त हुआ तो हम जल्दी मस्जिद में आ गए। वहां पहुंच कर मैंने सईद बिन ज़ेद रज़ि को मिंबर के पास बैठे हुए पाया तो मैं भी उनके पास बैठ गया। मेरा घटना उनके घुटने से लग रहा था। अब ये पूरी तफ़सील वर्णन कर रहे हैं। अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि हज़रत उमर रज़ि बिन ख़त्ताब निकले। जब मैंने उन्हें सामने से आते देखा तो मैंने सईद बिन ज़ेद रज़ि से कहा कि आज वह ऐसी बात कहेंगे जो उन्होंने जब से कि वह ख़लीफ़ा हुए नहीं कही। उन्होंने मेरी बात को अजीब समझा। उनके पास जो सहाबी बैठा था उन्होंने अजीब समझा। कहने लगे उम्मीद नहीं कि वह ऐसी बात कहें जो उन्होंने इस से पहले नहीं कही।

हज़रत उमर रज़ि मिम्बर पर बैठ गए। जब अज़ान देने वाला ख़ामोश हो गया तो वह खड़े हुए और अल्लाह की वो तारीफ़ की जिसका वह योग्य है। फिर कहा कि इस के बाद मैं तुमसे एक ऐसी बात कहने लगा हूँ कि मेरे लिए निर्धारित था कि मैं वह कहूं। मैं नहीं जानता कि शायद ये बात मेरी मौत के क़रीब की हो। इसलिए जिसने इस बात को समझा और अच्छी तरह याद रखा तो जहां भी इस की ऊंटनी उस को पहुंचा दे वह इस को वर्णन करे यानी इन बातों को जहां तक तुम पहुंचा सकते हो दूसरों तक सही रंग में उनको पहुंचाना और जिसको यह भय हो कि उसने उस को नहीं समझा तो मैं किसी के लिए जायज़ नहीं रखता कि मेरे बारे में झूठ कहे। ग़लत बात ना पहुंचाना। फिर आप ने फ़रमाया कि अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चाई के साथ भेजा और आप पर अहकाम शरीयत नाज़िल किए। फिर कुछ अहकाम का भी ज़िक्र किया एक लंबी तफ़सील है। यह हदीस है इस को मैं छोड़ता हूँ। फिर आप ने फ़रमाया सुनो!तो फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये भी फ़रमाया था कि बढ़ा चढ़ा कर मेरी तारीफ़ ना करो जैसा कि ईसा बिन मर्यम की तारीफ़ में मुबालग़ा किया गया और फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि मेरे बारे में यह कहा करो कि वह अल्लाह का बंदा और इस का रसूल है। फिर हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि मुझे यह ख़बर पहुंची है कि तुम में से कोई कहने वाला यह कहता है। इस बात को वर्णन किया कि हज़रत अबू बकर रज़ि को तो ख़िलाफ़त यूंही मिल गई। आप ने फ़रमाया कि इस शख़्स ने अबू बकर रज़ि के बारे में भी कहा है और फिर मेरे बारे में भी कहा है कि अल्लाह क़सम! अगर उम्र मर गया तो मैं अमुक की बैअत करूँगा। आप ने फ़रमाया इसलिए कोई शख़्स धोके में रह कर यह ना कहे। इस बारे में वज़ाहत कर दूं कि फिर आप बात को पहले हज़रत अबू बकर रज़ि की तरफ़ ले गए और आप ने फ़रमाया कि कोई शख़्स धोखे में रह कर यह ना कहे कि अबू बकर रज़ि की बैअत यूंही अफ़रातफ़री में ग़लती से हो गई थी और वह सरअंजाम पा गई और इस तरह आप ख़लीफ़ा बन गए सुनो! यह दरुस्त है कि वह बैअत इसी तरह हुई थी लेकिन अल्लाह तआला ने इस अफ़रातफ़री की बैअत के बुराई से बचाए रखा। ठीक है वह अफ़रातफ़री में ही हुई थी। ऐसा अवसर आया था लेकिन इस की बुराई से अल्लाह तआला ने बचाया और तुम में अबू बकर रज़ि जैसा कोई नहीं कि जिसके पास ऊंटों पर सवार हो कर लोग आएं । अर्थात कि ऐसा आलिम बाअमल और मुख़लिस और तक़्वा के स्तर पर पहुंचा हुआ और कोई शख़्स नहीं था। फिर आगे बाक़ी बातों की कुछ तफ़सील वर्णन हुई है। फिर आप ने फ़रमाया कि जिसने मुस्लमानों के मश्वरे के बग़ैर किसी शख़्स की बैअत की तो इस की बैअत ना की जाए अर्थात कि जो बैअत हुई थी वह बड़े मश्वरे से हुई थी और ये भी याद रखो कि जिसने मुस्लमानों के मश्वरे के बग़ैर किसी शख़्स की बैअत की तो इस की बैअत ना की जाए और ना उस शख़्स की जिसने उस की बैअत की। इसलिए कि कहीं वह अपने आपको मरवा डाले।

फिर हज़रत उमर रज़ि ने वर्णन फ़रमाया और असल में हमारी घटना यूं हुई थी कि जब अल्लाह ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वफ़ात दी तो अन्सार हमारे मुख़ालिफ़ हो गए और वे सब सक़ीफ़ा बनू साअदा में इकट्ठे हो गए और अले रज़ि और ज़ुबेर रज़ि और जो इन दोनों के साथ थे, हमारे मुख़ालिफ़ थे, और मुहाजिर इकट्ठे हो कर अबू बकर रज़ि के पास आए। मैंने अबू बकर रज़ि से कहा कि अबू बकर रज़ि आओ हम अपने इन अन्सार भाईयों के पास चलें। हम उन्हीं का क़िस्सा वर्णन करते हुए चले। वही बातें करते हुए चले जा रहे थे कि वे क्या बातें कर रहे हैं । जब हम उनके क़रीब पहुंचे तो उनमें से दो नेक मर्द हमें मिले और पहली रिवायत जो मैंने वर्णन की थी उस के अनुसार वो जो दो नेक मर्द थे उनमें से एक हज़रत मअन बन अदी रज़ि थे। बहरहाल आप फ़रमाते हैं और जिस मश्वरे पर वे लोग यानी अन्सार जो थे इत्तिफ़ाक़ के साथ तय्यार थे इन दोनों ने जो हमें रस्ता में मिले उनका ज़िक्र किया और उन्होंने कहा कि ए मुहाजिरीन जमात!तुम कहाँ जाना चाहते हो? हमने कहा कि हम इन अन्सारी भाईयों को मिलना चाहते हैं। तो इन दोनों ने जो रास्ते में मिले थे ये कहा जिनमें हज़रत मअन बन अदी रज़ि भी थे कि हरगिज़ ना वहां जाना। तुम्हें यही मुनासिब है कि उनके पास ना जाओ। तुमने जो मश्वरा करना है वह ख़ुद ही कर लो। हज़रत उमर रज़ि कहते हैं मैंने कहा कि अल्लाह की क़सम हम ज़रूर उनके पास जाऐंगे और यह कह कर हम चल पड़े और बनू साअदा के शामियाने में उनके पास पहुंचे।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल हदूद बाब रज्म अलहबली मिनज़ज़ना हदीस नम्बर 6830)

वहां अन्सार की हज़रत अबू बकर रज़ि की और हज़रत उमर रज़ि की एक लंबी बेहस हुई और जो गुफ़्तगु थी वह ख़िलाफ़त के इंतिख़ाब के बारे में थी और फिर आगे उस की एक लंबी तफ़सील है। इस सक़ीफ़ा बनू साअदा वाली घटना की कुछ हद तक तफ़सील जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने वर्णन फ़रमाई है वह मैं वर्णन कर देता हूँ। यहां अन्सार की जगह पर बैठे हुए थे। इस घटना का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर सहाबा के तीन गिरोह बन गए थे। एक गिरोह ने यह ख़्याल किया कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद एक ऐसा शख़्स ज़रूर होना चाहिए जो निज़ाम इस्लामी को क़ायम करे मगर चूँकि नबी की इच्छा को इस के अहल अयाल ही बेहतर तौर पर समझ सकते हैं इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहल में से ही कोई शख़्स निर्धारित होना चाहिए। एक गिरोह यह कहता था कि आपकी औलाद में

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

से कोई शख़्स होना चाहिए। किसी और ख़ानदान में से कोई और शख़्स नहीं होना चाहिए। इस गिरोह के ज़हन में ये बात थी कि अगर किसी और ख़ानदान में से कोई शख़्स ख़लीफ़ा निर्धारित हो गया तो लोग उस की बातें मानेंगे नहीं और इस तरह निज़ाम में क़राबी होगी। ख़ानदान से औलाद मुराद है या उनके क़रीबी दामाद इत्यादि भी हो सकते हैं। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं लेकिन अगर आप के ख़ानदान में से ही कोई ख़लीफ़ा निर्धारित हो गया तो चूँकि लोगों को इस ख़ानदान की इताअत की आदत है इसलिए वह ख़ुशी से इस की इताअत क़बूल कर लेंगे। जैसे एक बादशाह की बात मानने के लोग आदी हो चुके होते हैं जब वफ़ात पा जाता है तो इस का बेटा जांनशीन बनता है तो इस की इताअत भी शौक़ से करने लग हैं ।

मगर दूसरा फ़रीक़ जो था उसने सोचा कि इस के लिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहल में से होने की शर्त ज़रूरी नहीं है। मक़सद तो यह है कि रसूल करीम का एक जांनशीन हो। अत: जो सबसे ज़्यादा उस का अहल हो उस के सुपर्द काम होना चाहिए। इस दूसरे गिरोह के फिर आगे दो हिस्से हो गए और यद्यपि वे दोनों इस बात पर सहमत थे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई जांनशीन होना चाहिए मगर उनमें से इस बात पर मतबेद हो गया कि रसूल करीम का जांनशीन किन लोगों में से हो। एक गिरोह का ख़्याल था कि जो लोग सबसे ज़्यादा अर्से तक आप की तालीम को समझ रहे हैं वे उस के अधिकारी हैं अर्थात मुहाजिर और उनमें से भी क़ुरैश जिनकी बात मानने के लिए अरब तैयार हो सकते हैं और कुछ ने ये ख़्याल किया कि चूँकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात मदीने में हुई है और मदीने में अन्सार का ज़ोर है इसलिए वही इस काम को अच्छी तरह चला सकते हैं। बहरहाल इस पर अन्सार और मुहाजिरीन में मतभेद भी हुआ। अत: अब अन्सार और मुहाजिरीन में इख़तिलाफ़ हो गया। अन्सार का यह ख़्याल था कि चूँकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने असल ज़िन्दगी जो निज़ाम के साथ सम्बन्ध रखती है हमारे अंदर गुज़ारी है। अन्सार यह कहते थे कि मदीने में गुज़ारी है और मक्का में कोई निज़ाम नहीं था इसलिए निज़ाम हुकूमत हम ही बेहतर तौर पर समझ सकते हैं और ख़िलाफ़त के बारे में हमारा ही हक़ है किसी और का हक़ नहीं है। दूसरी दलील वह ये देते थे कि ये इलाक़ा हमारा है और कुदरती बात है कि हमारी बात का ही लोगों पर ज़्यादा असर हो सकता है मुहाजिरीन का असर नहीं हो सकता। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जांनशीन हम में से होना चाहिए मुहाजिरीन में नहीं।

इस के मुक़ाबले में मुहाजिरीन ये कहते थे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जितनी लंबी सोहबत हमने उठाई है उतनी लंबी सोहबत अन्सार ने नहीं उठाई, इतना अरसा उनके साथ नहीं रहे इसलिए धर्म को समझने की जो क़ाबिलीयत हमारे अंदर है वह अन्सार के अंदर नहीं है। आप लिखते हैं कि इस इख़तिलाफ़ पर अभी दूसरे लोग ग़ौर ही कर रहे थे और वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे थे कि इस आख़िरी गिरोह ने जो अन्सार के हक़ में था बनी साअदा के एक बरामदा में जमा हो कर इस बारे में मश्वरा शुरू कर दिया और साद बिन उबादह रज़ि जो ख़ज़रज के सरदार थे और नक़ीबों में से थे उनके बारे में तबीयतों का इस तरफ़ रुजहान हो गया कि उन्हें ख़लीफ़ा निर्धारित किया जाये। अत: अन्सार ने आपस में गुफ़्तगु करते हुए कहा कि देश हमारा है, ज़मीनें हमारी हैं, जायदादें हमारी हैं और इस्लाम का फ़ायदा इसी में है कि हम में से कोई ख़लीफ़ा निर्धारित हो। इस बात पर फ़ैसला किया कि इस मन्सब के लिए साद बिन उबैदह रज़ि से बेहतर और कोई शख़्स नहीं। यह गुफ़्तगु हो रही थी कि कुछ ने कहा कि अगर मुहाजिरीन उस का इनकार करेंगे तो क्या होगा? सवाल उठा। इस पर किसी ने कहा कि फिर हम कहेंगे कि مِنَّا اَمِيْرٌ وَمِنْكُمْ اَمِيْر । अर्थात एक अमीर तुम में से हो और एक हम में से। साद जो बहुत अक्लमन्द आदमी थे उन्होंने कहा कि यह तो पहली कमज़ोरी है। अन्सार जिनको अमीर ख़लीफ़ा बनाना चाहते थे, उन्होंने कहा कि यह तो पहली कमज़ोरी है अर्थात या तो हम में से ख़लीफ़ा होना चाहिए या उनमें से। مِنَّا اَمِيْرٌ وَمِنْكُمْ اَمِيْرٌ कहना तो मानो ख़िलाफ़त के मफ़हूम को ना समझना है और इस से इस्लाम में फित्ना पड़ेगा और यह फित्ना डालना है। इस मश्वरे के बाद जब मुहाजिरीन को सूचना हुई तो वे जल्दी से वहीं आ गए जैसा कि हज़रत उमर रज़ि ने वर्णन फ़रमाया जो पहले ज़िक्र हो चुका कि आप हज़रत अबू बकर रज़ि और कुछ और लोग वहां गए। क्योंकि वे समझते थे कि अगर मुहाजिरीन में से कोई ख़लीफ़ा ना हुआ तो अरब उस की इताअत नहीं करेंगे। सिर्फ मदीना की बात नहीं बल्कि पूरे अरब की बात है। मदीने में बेशक अन्सार का ज़ोर था मगर समस्त अरब मक्का वालों की अज़मत और उनके शरफ़ को मानने वाला था। अत: मुहाजिरीन ने समझा कि अगर इस वक़्त अन्सार में से कोई ख़लीफ़ा निर्धारित हो गया तो अरब वालों के लिए सख़्त मुश्किल पेश आएगी और मुम्किन है कि उनमें से अक्सर इस इबतिला में पूरे ना उतरें अत: जब सब मुहाजिरीन वहीं आ गए और उनमें हज़रत अबू बकर रज़ि , हज़रत उमर रज़ि , हज़रत अबू उबेदह रज़ि भी शामिल थे। हज़रत उमर रज़ि कहते हैं कि मैंने इस अवसर पर वर्णन करने के लिए एक बहुत बड़ा मज़मून सोचा हुआ था और मेरा इरादा था कि मैं जाते ही एक ऐसी तक़रीर करूँगा जिससे समस्त अन्सार मेरी दलीलों को मानने वाले हो जाऐंगे और वे इस बात पर मजबूर हो जाऐंगे कि अन्सार के बजाय मुहाजिरीन में से किसी को ख़लीफ़ा चुनें । मगर जब हम वहां पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ि तक़रीर करने के लिए खड़े हो गए। मैंने अपने दिल में कहा कि उन्होंने भला क्या वर्णन करना है मगर ख़ुदा की क़सम! जितनी बातें मैंने सोची हुई थीं वे सब उन्होंने, हज़रत अबूबकर रज़ि ने वर्णन कर दीं बल्कि उस के इलावा उन्होंने अपने पास से भी बहुत सी दलीलें दीं। तब मैंने समझा कि मैं अबू बकर रज़ि का मुक़ाबला नहीं कर सकता। अत: मुहाजिरीन ने उन्हें बताया कि इस वक़्त क़ुरैश में से ही अमीर होना ज़रूरी है और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह हदीस भी पेश की कि اَلْاَئِمَّةُ مِنْ قُرَيْشٍ कि क़ुरैश में से तुम्हारे इमाम हूँ और उनकी सबक़त धर्म और उनकी क़ुर्बानीयों का ज़िक्र किया जो वे दर्म के लिए करते चले आए थे। इस पर हुबाब बिन मुनिज़र ख़ज़रजी ने मुख़ालिफ़त की और कहा कि हम इस बात को नहीं मान सकते कि मुहाजिरीन में से ख़लीफ़ा होना चाहिए। हाँ अगर आप लोग किसी तरह नहीं मानते और आपको इस पर बहुत इसरार है तो फिर यही है कि एक अमीर आप में से हो जाए एक हमारे में से। इस पर अमल किया जाए कि एक ख़लीफ़ा हम में से हो और एक आप लोगों में से। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि सोच समझ कर बात करो। तुम्हें मालूम नहीं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि एक वक़्त में दो अमीरों का होना जायज़ नहीं है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि इस से मालूम होता है कि हदीसें तो ऐसी मौजूद थीं जिनमें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निज़ाम ख़िलाफ़त की तशरीह की हुई थी मगर आप की ज़िन्दगी में सहाबा का ज़ेहन उधर मुंतक़िल नहीं हुआ और इस की वजह वही ख़ुदाई हिक्मत थी जिसका ज़िक्र हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अपने उस के पहले वर्णन में कर चुके हैं जो वर्णन कर रहे हैं। बहरहाल कहते हैं कि अत: हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि तुम्हारी यह मांग कि एक अमीर तुम में से हो और एक हम में से अक्ल और शरीयत की दृष्टि से जायज़ नहीं।

फिर हज़रत अबू बकर रज़ि का इंतिख़ाब किस तरह हुआ? कुछ बेहस मुबाहिसा के बाद हज़रत अबू उबैदह रज़ि खड़े हुए और उन्होंने अन्सार को ध्यान दिलाया कि तुम पहली क़ौम हो जो मक्का के बाहर ईमान लाई। अब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद तुम पहली क़ौम ना बनो जिन्होंने धर्म की इच्छा को बदल दिया और कहते हैं कि इस का तबीयतों पर ऐसा असर हुआ कि बशीर बिन साद ख़ज़रजी खड़े हुए और उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि ये लोग सच कहते हैं। हम ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

अलैहि वसल्लम की जो ख़िदमत की और आप की सहायता तथा समर्थन की वह दुनियावी उद्देश्यों से नहीं की थी और ना इसलिए की थी कि हमें आपके बाद हुकूमत मिले बल्कि हमने ख़ुदा तआला के लिए की थी। अत: हक़ का सवाल नहीं है कि हमारा हक़ है अमीर बने या हम में से ख़लीफ़ा बने बल्कि सवाल इस्लाम की ज़रूरत का है और इस लिहाज़ से मुहाजरीन में से ही अमीर निर्धारित होना चाहिए क्योंकि उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लंबी सोहबत पाई है। इस पर कुछ देर तक और बेहस होती रही मगर आख़िर आधा पौना घंटे के बाद लोगों की राय उसी तरफ़ होती चली गई कि मुहाजरीन में से किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित करना चाहिए। अत: हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि और हज़रत अबू उबैदह रज़ि को इस मन्सब के लिए पेश किया। हज़रत अबू बकर रज़ि ने फिर ख़ुद पेश किया कि या हज़रत उमर रज़ि हैं या हज़रत अबू उबैदह रज़ि हैं इन दोनों में से किसी की बैअत कर लेनी चाहिए मगर दोनों ने इनकार किया और कहा कि जिसे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बीमारी के दिनों में नमाज़ का इमाम बनाया था और जो सब मुहाजरीन में से बेहतर है हम तो इस की बैअत करेंगे।

जब हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि का और हज़रत अबू उबैदह रज़ि का नाम ख़िलाफ़त के लिए पेश किया तो उस पर हज़रत उमर रज़ि ने ख़ुद जो वर्णन किया है, जो पिछला क्रम चल रहा था। हज़रत उमर रज़ि कहते हैं कि इस बात के सिवा जैसा कि उन्होंने कहा नाँ कि हज़रत अबूबकर रज़ि ने यह बड़ी उच्च तक़रीर की इस में ये बातें भी हुईं। हज़रत उमर रज़ि कहते हैं कि सारी बातें बड़ी उच्च थीं लेकिन इस बात के सिवा मैंने और कोई बात नापसंद नहीं की जो उन्होंने कही यानी कि हज़रत उमर रज़ि का नाम पेश किया या हज़रत अबू उबैदह रज़ि का नाम पेश किया। आप कहते हैं कि अल्लाह की क़सम यह हाल था जब हज़रत अबू बकर रज़ि ने मेरा नाम पेश किया कि अगर मुझे आगे बढ़ा कर मेरी गर्दन उड़ा दी जाती कि यह मौत मुझे किसी गुनाह के क़रीब ना फटकने दे तो मुझे यह बात इस से ज़्यादा पसंद थी कि मैं ऐसी क़ौम का अमीर बनूं जिस में अबू बकर रज़ि हूँ अर्थात उनका मुक़ाम ऐसा है कि किस तरह हो सकता है कि इस वक़्त मुझे हज़रत अबू बकर रज़ि की मौजूदगी में अमीर बना दिया जाए तो मैंने उस को नापसंद किया। बाक़ी तक़रीर बहुत उच्च थी

बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि कहते हैं हज़रत उमर रज़ि ने जब कहा कि जो मुहाजरीन में से सबसे बेहतर है हम उस की बैअत करेंगे तो मतलब यह था कि इस मन्सब के लिए हज़रत अबू बकर रज़ि से बढ़कर और कोई शख़्स नहीं। अत: इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत शुरू हो गई। पहले हज़रत उमर रज़ि ने बैअत की। फिर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने बैअत की। फिर बशीर बिन साद ख़ज़रजी ने बैअत की और फिर औस और फिर ख़िज़रज के दूसरे लोगों ने और इस क़दर जोश उस वक़्त पैदा हुआ कि साद जो बीमार थे और उठ ना सकते थे। उनकी क़ौम उनको रौंदती हुई आगे बढ़कर बैअत करती थी। अत: थोड़ी ही देर में साद रज़ि और हज़रत अली रज़ि के सिवा सब ने बैअत कर ली। यहां तक कि साद रज़ि के अपने बेटे ने भी बैअत कर ली। हज़रत अली रज़ि ने कुछ दिनों बाद बैअत की। अत: कुछ रिवायतों में तीन दिन आते हैं और कुछ रिवायतों में यह ज़िक्र आता है कि आप ने छ: माह के बाद बैअत की थी। छ: माह वाली रिवायत में यह भी वर्णन हुआ है कि हज़रत फ़ातमह रज़ि की तीमारदारी में व्यस्त रहने की वजह से आप हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत ना कर सके और जब आप रज़ि बैअत करने के लिए आए तो आप ने यह माज़रत भी की कि चूँकि फ़ातमह रज़ि बीमार थीं इसलिए बैअत में मुझे देर हो गई है।

(उद्धरित ख़िलाफ़त राशिदा पृष्ठ 39 से 42 अन्वारुल उलूम जिल्द 15)

बहरहाल उस वक़्त सब ने बैअत की

हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि वर्णन करते हैं कि जिस वक़्त अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वफ़ात दी तो लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रोए और उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम हम यह चाहते थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले मर जाते। हमें अंदेशा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद फ़ित्ना में ना पड़ जाएं। हज़रत मअन रज़ि सहाबी जिनका ज़िक्र हो रहा है उन्होंने कहा कि अल्लाह क़सम ! मैं नहीं चाहता था। लोग तो यह कह रहे थे कि हम पहले मर जाते लेकिन हज़रत मअन रज़ि ने कहा नहीं। मैं नहीं यह चाहता था कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले मर जाता। क्यों? इसलिए कि मैं जब तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इसी तरह तसदीक़ ना कर लूं जैसा कि मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ की थी

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद जिल्द 3 पृष्ठ 244-245 मअन बिन अदी दारुल अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 1996 ई)

जिस तरह मैंने आप को नबी माना था इसी तरह वफ़ात के बाद भी इस बात की तसदीक़ ना कर लूं कि ख़िलाफ़त राशिदा का वही निज़ाम जिसकी पेशगोई आप ने फ़रमाई थी वह जारी हो चुका है और इसी को जारी रखना है और मुनाफ़क़ीन और मुरतदीन के जाल में नहीं आना।

अत: यही वह ईमान का स्तर है जिसे हर अहमदी को भी अपने अंदर क़ायम करना चाहिए। एक रिवायत के अनुसार हज़रत मअन रज़ि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि के साथ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद मुरतदीन और बाग़ियों को समाप्त करने में शामिल थे और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने दो सौ घुड़सवारों के साथ हज़रत मअन रज़ि को यमामा की तरफ़ बतौर आगे चलने वाले दस्ता के रूप में भेजा था।

(अलअसाब फ़ी तमीज़िस्सहाब: जिल्द 6 पृष्ठ 151 मअन बिन अदी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मअन रज़ि का हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि के साथ भाईचारा क़ायम फ़रमाया था। इन दोनों सहाबियों ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि के दौरे ख़िलाफत में जंग में 12 हिज्री में शहादत पाई थी

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न साद जिल्द 3 पृष्ठ 244 मअन बन अदी दारुल अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 1996 ई)

अल्लाह तआला हर अहमदी को भी नबुव्वत के मुक़ाम को पहचानने की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और ख़िलाफ़त के साथ वफ़ा और इख़लास का सम्बन्ध पैदा करने की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल13 सितंबर 2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

लिए रक़म मुहय्या करने वालों की आर्थिक क़ुर्बानियों और काम करने वाले की कोशिशों का ज़िक्र किया।

इस के बाद आदरणीय डाक्टर हफ़ीज़ अल-रहमान साहिब ने जो स्टेज सेक्रेटरी के फ़राइज़ अंजाम दे रहे थे, स्टेज पर बिराजमान मेहमानों का परिचय करवाया इसी तरह इस आयोजन में शामिल कुछ दूसरे अहम मेहमानों का भी परिचय करवाया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार दो मेहमानों कांग्रेस वूमैन Norma Torres साहिबा अमरीका और वाइस मिनिस्टर आफ़ हैल्थ ग्वेटामाला ने अपने सम्बोधन पेश किए।

कांग्रेस वू मैन Norma Torres साहिबा ने जिनका सम्बन्ध कैलीफोर्निया अमरीका से है (खासतौर पर नासिर हस्पताल की उद्घाटन आयोजन में शिरकत के लिए अमरीका से ग्वेटामाला आई थीं)अपना सम्बोधन पेश करते हुए कहा: यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मैं इस प्रोग्राम में शामिल हुई हूँ जहां आप नासिर हस्पताल के उद्घाटन के लिए इकट्ठे हुए हैं। यह हस्पताल बहुत महत्वपूर्ण है और मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत ग्वेटामाला के साथ काम करके बहुत गर्व महसूस करती हूँ। पहले मैं हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस का शुक्रिया अदा करती हूँ कि आप यहां तशरीफ़ लाए हैं। हम आपके नेतृत्व और यहां के लोगों की सेवा के भावना से बहुत प्रभावित हैं। हमें ग्वेटामाला में मेडिकल सहूलतें बेहतर करने में बहुत से चैलेंजों का सामना है। उदाहरण के तौर पर यहां पर क़त्ल की वारदातों की तुलना में शूगर से ज़्यादा लोगों मरते हैं। फिर गर्भवती औरत की हलाकत का प्रतिशत यू एस ए से बहुत ज़्यादा है। यह प्रतिशत देहाती इलाक़ों में और भी ज़्यादा है जहां मेडीकल सहूलतें ना होने के बराबर हैं। यह एक बहुत बड़ी वजह है कि ग्वेटामाला आर्थिक तरक़्क़ी नहीं कर पा रहा जिसकी उसे बहुत ज़रूरत है।

अत: इस हस्पताल का स्थापना तरक़्क़ी की तरफ़ एक क़दम है। और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट और अहमदिया मुस्लिम जमाअत से बढ़कर इस काम को और कोई नहीं कर सकता। पिछले कई सालों से में Chino मैं अहमदिया मस्जिद की वजह से अहमदिया जमाअत से वाक़िफ़ हूँ। अहमदी हमारे समाज के काम करने वाले मैंबर हैं, सामाजिक कामों में सब से आदे हैं और उदारता में उदाहरण रखते हैं। हम यहां ग्वेटामाला में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की ख़िदमतों से बहुत प्रभावित हैं। अहमदी डाक्टरों की टीमें यहां आँखों के मुफ़्त ऑप्रेशन करने के लिए आती हैं और उन्हें मालूम है कि यहां हस्पतालों की कमी है। अत: वे चुप करके नहीं बैठे, बल्कि उन्होंने क़दम आगे बढ़ाया और अब यहां हस्पताल स्थापित कर दिया है। इस के लिए बहुत सी मेहनत, कोशिश , प्लैनिंग और सुविधाओं की ज़रूरत थी। आज हम अन्त में इसके उद्घाटन के लिए इकट्ठे हुए हैं। मैं हुज़ूर अनवर का दिल की गहराई से शुक्रिया अदा करती हूँ। मैं ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट और अहमदिया मुस्लिम जमाअत का शुक्रिया अदा करती हूँ। महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में एक यादगारी शील्ड भी पेश की।

इसके बाद ग्वेटामाला के वाइस मिनिस्टर आफ़ हैल्थ ने भी स्पेनिश ज़बान में अपना संक्षिप्त सम्बोधन पेश किया। उन्होंने कहा: मुझे इस प्रोग्राम में शिरकत करके बहुत ख़ुशी हुई है। मैं हुज़ूर अनवर और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट और अहमदिया मुस्लिम जमाअत का शुक्रिया अदा करता हूँ। यू एस ए से डाक्टरों ने बहुत सहायता की है, उनका भी बहुत शुक्रिया। आप लोगों ने दुनिया के इस हिस्सा में आकर हस्पताल स्थापित किया है और ज़रूरतमंद कम्यूनिटीज़ की मदद के लिए आगे बढ़े हैं। मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ।

इसके बाद चार बजकर पच्चास मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया। ख़िताब का हिन्दी अनुवाद पेश है।

23 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक मंगलवार)

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

तशह्हुद, तअव्वुज़ तथा तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सब पर अल्लाह तआला की सलामती और बरकतें नाज़िल हूँ। मैं पहले सारे सम्मान्नीय मेहमानों का जो आज यहां ग्वेटामाला में इस प्रोग्राम में शिरकत कर रहे हैं, शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। बे शक आज अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लिए बहुत ख़ुशी और आन्नद का अवसर है। क्योंकि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट का मध्य या दक्षिणी अमरीका में यह पहला हस्पताल स्थापित हो रहा है। इसलिए हम इस को निहायत अहम और इतिहास बनाने वाला अवसर समझते हैं। यद्यपि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट एक आज़ाद फ़लाही संस्था है और उसका अपने नियम और हिकमत अमली है। लेकिन असल में इस की बुनियाद अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने रखी है। दुनिया-भर में अहमदी माली क़ुर्बानीयों और अन्य माध्यमों से ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट की सहायता करते हैं ताकि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट इन्सानियत की सेवा के स्तर बुलंद कर सके और अपने प्रोग्रामों को बड़ा कर सके। अत: ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट का अहमदिया मुस्लिम जमाअत से एक गहरा सम्बन्ध है। इसलिए आज यह सिर्फ़ ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के लिए आन्नद का अवसर नहीं बल्कि सारी दुनिया में मौजूद अहमदी मुसलमानों के लिए भी ख़ुशी का कारण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सोच रहे होंगे कि हमने यह हस्पताल क्यों बनाया है। इस का जवाब बहुत आसान है। इस हस्पताल को विशेष रूप से सिर्फ एक ही नीयत के अन्तर्गत बनाया गया है और यह नीयत इन्सानियत की सेवा की है ताकि इस देश के लोगों को उच्च स्तर का ईलाज उपलब्ध किया जाए। मैं शुरू में ही आपको बताता चलूं कि इस संस्था की स्थापना हमारी इस देश के लिए ख़िदमतों का अन्त नहीं है, बल्कि मेरी दुआ है कि इस रीजन में ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट की तरफ से बेशुमार इन्सानियत की सेवा के प्रोग्रामों के लिए यह संस्था एक मील का पत्थर साबित हो। निसन्देह मैं उम्मीद रखता हूँ और दुआ करता हूँ कि यहां पर हस्पताल का स्थापना एक लॉन्च पेड (launch pad) का काम दे जो कि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट को यहां और बाक़ी दुनिया में रीलीफ़ और स्पोर्ट के अन्य प्रोग्रामों को बढ़ाने में मदद उपलब्ध करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: शायद हमारे कुछ मेहमान हैरान हूँ या यह कहना चाहिए कि शायद वे परेशान हूँ कि क्यों एक मुसलमान जमाअत ग़ैर मुस्लिमों की मदद करने की इतनी भावना और जोश रखती है। तो इस का जवाब यह है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत अपने आरम्भ से लेकर आज तक मानव जाति की सेवा करने में हमेशा सफ़ अव्वल में गिनी जाती है। चाहे यह मदद सीधा हमारी जमाअत की तरफ से जारी की गई स्कीमों के द्वारा हो या फिर ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट और अन्य फ़लाही इदारों की मदद करने की शक्ल में हो। उदाहरण के तौर पर पिछली कुछ दहाईयों में अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने अफ़्रीक़ा में बहुत से हस्पताल और स्कूल स्थापित किए हैं। जिनके द्वारा बिना अन्तर रंग तथा नस्ल, मज़हब और समाज के स्थानीय लोगों को मेडीकल सहूलतें और उच्च शिक्षा के मवाक़े उपलब्ध किए जा रहे हैं। अफ़्रीक़ा में हमारे हस्पतालों में आने वाले मरीज़ और हमारे स्कूलों में आने वाले छात्रो की अधिकतर संख्या ग़ैर मुस्लिमों की है। हमारे स्कूलों में पढ़ने वाले 90 प्रतिशत के क़रीब बच्चे ग़ैर मुस्लिम हैं। अत: हम किसी गिरोह या क़ौम की कोई अन्तर नहीं करते और ना ही अपने अहमदी बच्चों को कोई फ़ौक़ियत देते हैं। हमारे इदारे प्राइमरी स्कूल से लेकर हायर सैकण्डरी एजूकेशन तक शिक्षा उपलब्ध कर रहे हैं। हमारा ध्यान है कि सारे बच्चे शिक्षा प्राप्त करें और उनकी शैक्षिक बुनियाद बहुत दृढ़ हो जिस पर वह अपने रोशन भविष्य की इमारत स्थापित करें। फिर ऐसे क़ाबिल छात्रों को हम स्कॉलरशिप भी देते हैं जो हायर एजूकेशन के खर्चों को बर्दाश्त नहीं कर सकते ताकि वे अपनी सलाहियतें बेहतर रंग में सामने ला सकें और अपने लिए और अपनी क़ौम के लिए बेहतर भविष्य बना सकें। इस तरह अहमदिया मुस्लिम जमाअत की अपने तौर पर या ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के द्वारा इन्सानी सेवा करने की और ऐसे लोगों को जो ग़ुर्बत की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं सुविधाएं मुहय्या करने और उनकी मदद करने के बारे में एक लंबा इतिहास है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम इन ख़िदमतों के बदले कोई प्रशंसा या बदला की मांग नहीं करते, क्योंकि हम वह कर रहे जो हमारा मज़हब हमें शिक्षा देता है। हमारे अंदर दूसरों की सेवा करने के भावना का मुहर्रिक सिर्फ़ इस्लामी शिक्षाएं हैं। हर सच्चे मुसलमान के लिए कुरआन करीम हिदायत की रोशनी है, जो कि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इलहाम किया गया। कुरआन करीम में कई स्थानों पर अल्लाह तआला ने मुसलमानों को शिक्षा दी है कि वह मानव जाति की सेवा करें और मुश्किल में घिरे और वंचित लोगों की मदद करें। कुरआन करीम मुसलमानों से मांग करता है कि वह बे-नफ़्स हो कर दूसरों की सेवा करने की हार्दिक भावना रखें कुरआन करीम हमसे मांग करता है कि हम अन्य लोगों के सुरक्षा और उनकी फ़लाह के लिए हर क़ुर्बानी के लिए प्रत्येक समय तय्यार रहीं। जैसे, कुरआन करीम की सूरा ऑल इम्रान की आयत 111 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सच्चे मुसलमान

वे हैं जो अच्छी बातों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों और नाइंसाफ़ी से दूर रहते हैं और दूसरों को भी अच्छे काम करने की नसीहत करते हैं। सिर्फ वह शख़्स दूसरों का ख़्याल रख सकता है और उनकी सेवा कर सकता है जो मानव जाति से सच्ची हमदर्दी करने वाला हो और ख़ुदा की सृष्टि का दर्द रखता हो। इन्सानियत से ऐसी उच्च स्तर की मुहब्बत सिर्फ उसी अवस्था में कर सकता है जब आपका दिल साफ़ हो और ख़ुदग़रज़ी और नफ़रत से पाक हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: कुरआन करीम की सूरा अलबकरा की आयत 84 में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हर क्षण नेक बात कहने और दूसरों के भावनाओं का ख़्याल रखने और समाज के कमज़ोर वर्गों जैसा कि यतीमों और मिस्कीनों की हिफ़ाज़त और उनकी मदद करने का हुक्म दिया है।

फिर कुरआन करीम की सूर: अज़ज़ारियात आयत 20 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एक सच्चे मुसलमान की नुमायां विशेषता है कि वह ख़ुदा की सारी सृष्टि का ख़्याल करता है और ज़रूरतमंदों को आसानी उपलब्ध करने और उनकी मदद करने के लिए कोशिश करता है, चाहे वह मदद के लिए पुकारें या ना पुकारें। अत: एक मुसलमान के लिए यह काफ़ी नहीं है कि इस वक़्त तक इंतिज़ार करे जब तक कोई उस को मदद के लिए बुलाए बल्कि उस की यह ज़िम्मेदारी है कि वह दूसरों की तकलीफ़ों का एहसास करे और उनकी मदद करने के लिए हर किस्म की क़ुर्बानी दे ताकि वह अपनी मुश्किलें पर क़ाबू पा लें।

फिर कुरआन करीम की सूरत अलबलद आयत 15 से 17 में अल्लाह तआला मुसलमानों को भूखों को खाना उपलब्ध करने, यतीमों से दया का सुलूक करने और प्रत्येक ज़रूरतमंद ,ख़ासकर ऐसे लोगों जो असहाय और कमज़ोर हैं की मदद का हुक्म देता है। मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि वह ऐसे बनें कि समाज के धुतकारे हुओं के साथ खड़े हूँ और ख़ुद उनके बोझ उठाएं। मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि वह महरूम लोगों की मदद करें ताकि वे अपने पांव पर खड़े हो सकें, अपने मुश्किल हालात से निकल सकें और सम्मानपूर्वक ज़िन्दगी गुज़ार सकें। इसके बदला में कुरआन करीम मुसलमानों को बिशारत देता है कि ऐसे लोग रूहानियत में तरक़्क़ी करेंगे और ख़ुदा के मुक़र्रब होंगे और ख़ुदा की प्रसन्नता के वारिस होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह सूरा अल-बकरा की आयत 196 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर कोई शख़्स अपने आपको ज़िल्लत तबाही से बचाने की इच्छा रखता है तो उसे हर हाल में बिना किसी बदला के दूसरों से दया और सख़ावत करने का मुज़ाहरा करना होगा। सूरा निसा की आयत 37 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुसलमानों को अपने पड़ोसियों से हुस्न सुलूक करना चाहिए और इस बात को फिर से दुहराता है कि वास्तविक मुसलमान वे हैं जो ज़रूरतमंदों, यतीमों मिसकीनों की मदद करते हैं। कुरआन करीम मुसलमानों को हुक्म देता है कि दूसरों से हुस्न सुलूक करें और अपने आधीनों से प्यार तथा दया से पेश आएं। जैसे अगर काम की जगह पर किसी मुसलमान का कोई आधीन है तो उसे चाहिए कि वह इस से दया और खुले दिल का मुज़ाहरा करे फिर कुरआन करीम की सूरा मुहम्मद की आयत 39 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुसलमान अपनी दौलत दूसरों की मदद के लिए ख़र्च करें जो ऐसा नहीं करना चाहते उन्हें कंजूस क़रार दिया गया है और फ़रमान है कि ऐसे कंजूस अल्लाह तआला को पसंद नहीं हैं और इन्सानी रूह के अन्धकार का कारण हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये कुरआन की आयतों जो मैंने बयान की हैं इस बात का महत्व बताती हैं कि अगर मुसलमान ख़ुदा तआला की मुहब्बत प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें लाज़िमन पहले ख़ुदा की सृष्टि की मदद करनी होगी। यह आयतें बड़े स्पष्ट अंदाज़ में बयान करती हैं कि इस्लाम की बुनियाद इन्सानियत की सेवा पर है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम के यह ये उद्धरण पेश करने का मक़सद यह है कि आप सब को मालूम हो के इस्लाम वह नहीं है जो आम तौर पर मीडिया में पेश किया जाता है। यह इंतिहापसंदी, फ़साद या दहश्तगर्दी का मज़हब नहीं है बल्कि यह प्यार, मुहब्बत और बराबरी का मज़हब है। यह वह मज़हब है जो अपने अनुयायियों पर इन्सानियत की सेवा को बुनियादी फ़र्ज़ क़रार देता है। इसलिए यह कैसे मुम्किन है कि एक वास्तविक मुसलमान सख़्त दिल हो या तकलीफ़ में घिरे हुए और मुश्किलें में घिरे हुए लोगों की मदद ना करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: कुरआन करीम की इन आयतों की रोशनी की बाद मैं अब इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन्सानियत की सेवा की कुछ उदाहरण पेश करूँगा। इस नवीन दौर में अक्सर यह एतराज़ किया जाता है कि रसूल करीम (नऊज़ बिल्लाह) एक जंग करने वाले लीडर थे जिन्होंने अपने अनुयायियों को शिद्दत पसंदी की शिक्षा दी। अत: स्पष्ट हो कि यह हक़ीक़त के बिलकुल विरुद्ध है और आपकी पवित्र ज़ात पर यह इल्ज़ाम सरासर नाइंसाफ़ी है। इस्लाम के पैग़ंबर ने तो हर क़ौम , हर नस्ल और हर अक़ीदा के लोगों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त की और आप सारी कायनात के लिए रहमत थे। आपकी मुबारक ज़ात से इन्सानियत के लिए लाज़वाल मुहब्बत फूटती थी। उदाहरण के तौर पर एक अवसर पर रसूल करीम ने फ़रमाया कि मैं कमज़ोर के साथ हूँ। क्योंकि कमज़ोर और ग़रीब का साथ देना अल्लाह तआला का क़ुरब प्राप्त करने का दरवाज़ा है।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी कि अल्लाह तआला उन लोगों से बे-इंतिहा ख़ुश होता है जो ग़रीबों की मदाद करते हैं , जो ग़रीबों की भूख मिटाते हैं और उन्हें ईलाज मुहय्या करते हैं। अत: अगर कोई शख़्स सच्चा मुसलमान होने का दावा करता है तो इस का सबसे अहम और ज़रूरी कर्तव्य यह है कि वह सारी मुसीबत में पड़े लोगों की मदद करे और उनकी तकलीफ़ और मुश्किल दूर करने के लिए भरपूर कोशिश करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने इस ज़माना में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को उजागर करने के लिए जिस शख़्स को भेजा वह जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक थे जिन्हें हम मसीह मौऊद महदी माहूद मानते हैं। आप अलैहिस्सलाम इसलिए मबऊस हुए ताकि दुनिया को बताएं कि इस्लाम असल में क्या है और उसकी शिक्षाएं दुनिया के हर हिस्सा में पहुंचाएं। जहां आप अलैहिस्सलाम ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की रोशनी से मुनव्वर करने के लिए आए वहां आप मुसलमानों की इस्लाह के लिए भी आए जो अपने मज़हब की वास्तविक शिक्षाओं को भुला चुके थे ताकि उन्हें इस इस्लाम की तरफ़ वापस लेकर आएं जो क़ुरआन करीम और रसूल करीम ने पेश फ़रमाया। सबसे बढ़कर आप अलैहिस्सलाम ने मानव जाति को निरन्तर इस तरफ़ ध्यान दिलाया कि वे हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ुल ईबाद अदा करें।

एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इन्सानियत की सेवा दरअसल ख़ुदा तआला की इबादत है। इसी तरह एक और अवसर पर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरी तो यह हालत है कि अगर कोई तकलीफ़ में पीड़ित हो और मैं फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने में मशग़ूल हूँ और मुझ तक उनकी आह पहुंचे तो मैं अपनी नमाज़ तोड़ कर उनकी मदद करूँ।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि किसी भाई की ज़रूरत के समय मदद करने से इनकार करना सरासर ग़लत और ग़ैर अख़लाक़ी काम है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अगर किसी के पास मुश्किल में घिरे या तकलीफ़ में पीड़ित शख़्स की मदद करने के लिए ज़ाहिरी माध्यम मौजूद ना हूँ तो वो कम से कम ख़ुलूस नीयत से अल्लाह तआला से दुआ तो कर सकता है कि वे ऐसे लोगों की तकालीफ़ दूर कर दे। आप अलैहिस्सलाम ने हमें यह शिक्षा दी कि क़ुबूलियत दुआ भी एक पाक और नर्म-दिल को चाहती है। अत: मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वे दूसरों की बुरी हालत पर पर हमदर्दी को प्रकट करें और उन की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ जानें।

एक और अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं दूसरों की तुलना में कहीं बढ़कर लोगों की मिन्नत करता हूँ कि वे ग़ैर मुस्लिमों जैसा कि हिंदूओं और अन्य लोगों के साथ उच्च अख़लाक़ और प्यार का सुलूक करें।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की सृष्टि के साथ ऐसा प्यार का सुलूक करें जैसे आप अपने क़रीबी प्रियों के साथ करते हैं। मानव जाति के साथ वही सुलूक करें जो एक माँ अपने बच्चा से करती है। आपका यह तरीक़ा होना चाहिए। यह ना हो के आप किसी दूसरे की मदद सिर्फ इसलिए कर रहे हूँ कि बाद में आपको बदला में कोई फ़ायदा मिलेगा।

इसी तरह हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन करीम की सूरत अल-नहल की आयत 91 में अल्लाह तआला मुसलमानों को हुक्म देता है कि वे न्याय से काम लें और दूसरों के साथ भलाई करें। यहां तक कि इन

लोगों के साथ भी नेक सुलूक करें जिन्होंने आप के साथ कोई भलाई ना की हो बल्कि इस से भी बढ़कर आपको ऐसे लोगों पर एहसान करना चाहिए और उनका ऐसे ख़्याल रखें जैसे एक माँ अपने बच्चा का रखती है। यह क्या ही शानदार और उच्च शिक्षा है! हम सबको माँ की मुहब्बत का तजुर्बा है जो इस को अपने बच्चे के साथ होती है। माँ इस मुहब्बत का कोई बदला नहीं चाहती और ना यह चाहती है कि इस की क़द्रशनासी हो। माँ ख़ुद से ज़्यादा अपने बच्चा से प्यार करती है और उस का अपनी नस्ल की हिफ़ाज़त और इस का ख़्याल रखने का इरादा कभी ढीला नहीं पड़ता। अत: इस्लाम मुसलमानों से तक़ाज़ा करता है कि वे माँ की बेग़र्ज़ मुहब्बत की तरह अपने दिलों में ना सिर्फ अपनी औलाद के लिए बल्कि सारी मानव जाति के लिए प्यार को उजागर करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: व्यवहारिक तौर पर भी हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दूसरों की सेवा करने का कभी कोई अवसर हाथ से ना जाने दिया। उदाहरण के तौर पर उन्नीसवीं सदी में आप अलैहिस्सलाम इंडिया के एक छोटे से गांव में रहते थे जहां नियमित मैडीकल सहूलतें उपलब्ध ना थीं। लेकिन इन्सानियत की सेवा के भावना की वजह से आप अलैहिस्सलाम ने रिवायती तिब्ब का अध्यन किया और घर में विभिन्न दवाइयां भी रखी हुई थीं। अत: स्थानीय लोग आप अलैहिस्सलाम के पास आते और आप अलैहिस्सलाम ज़ात पात और मज़हब से भुला कर उन्हें उनकी ज़रूरतोंके अनुसार दवाइयां प्रदान फ़रमाते। बहुत से लोग विशेष रुप से ग़रीब और बेकस लोगों ने इस सुविधा से बहुत फ़ायदा प्राप्त किया। इस के पीछे सिर्फ और सिर्फ यही मक़सद और आरज़ू थी कि वह इन्सानियत की सेवा कर सकें। और यही वह महान ख़ज़ाना और क़ीमती विरसा है जो आप अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत के लिए छोड़ा। अत: जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की सारी दुनिया में इन्सानियत की सेवा करने की कोशिशों के पीछे सिर्फ एक ही आरज़ू है कि सारी मानव जाति की तकलीफ़ों और दुख को दूर किया जाए। यही वजह है कि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट आज दुनिया के इस हिस्सा में अपना पहला हस्पताल खोल रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं दिल तथा जान से दुआ करता हूँ कि यह हस्पताल अपना मक़सद पूरा करे और मज़हब तथा नस्ल और छोटे बड़े की अन्तर से ऊंचा हो कर लोगों की तकलीफ़ को दूर करने का एक बेहतरीन माध्यम साबित हो। जैसा कि मैंने पहले कहा कि हमें दुनिया से किसी किस्म के बदला या प्रशंसनीय बातें नहीं चाहिऐं। हमारा मक़सद सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा और प्यार प्राप्त करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह तहरीर हमारे लिए हमेशा मार्ग दर्शन है जहां आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इन्सानियत की सेवा हमारी ज़िन्दगियों का वास्तविक मक़सद पूरा करने और अल्लाह तआला के इनामों और फ़ज़लों को प्राप्त करने का माध्यम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मुझे यक़ीन है कि अब आप सब पर स्पष्ट हो गया होगा कि हमने यह हस्पताल कोई आर्थिक लाभ या शौहरत प्राप्त करने के लिए नहीं बनाया बल्कि हमारा मक़सद सिर्फ यही है कि इस देश के लोगों को उच्च मेडीकल सहूलतें मुहय्या कर के उनकी सेवा करें। आप यक़ीन रखें कि इस हस्पताल के द्वारा से जो भी फ़ंडज़ इकट्ठे होंगे वे ग्वेटामाला के लोगों की और अधिक सेवा के लिए प्रयोग होंगे और एक पाई भी ग्वेटामाला से बाहर नहीं भिजवाई जाएगी। मरीज़ों की फ़ीस के द्वारा जो भी आय होगी उस को दुबारा ग्वेटामाला के लोगों पर ही ख़र्च किया जाएगा ताकि इस बात की यक़ीन दहानी करवाई जा सके कि जो लोग ईलाज नहीं करवा सकते उन्हें कम ख़र्च पर या अगर मुम्किन हुआ तो बिलकुल मुफ़्त ईलाज मुहय्या किया जाए। इस के अतिरिक्त जो भी आय होगी उसे इस हस्पताल की सहूलतों के स्तर को बरक़रार रखने या उन्हें बेहतर करने या मानव जाति की और अधिक सेवा पर प्रयोग किया जाएगा। हमारे पिछले इन्सानी फ़लाह तथा भलाई के मन्सूबें मेरी इन बातों की सच्चाई को साबित करते हैं। जहां कहीं भी हमने स्कूल या हस्पताल बनाए हैं वहां से प्राप्त की गई आय को हमने कभी देश से बाहर नहीं भिजवाया बल्कि इस आय को हमेशा हमने इसी देश में इस तरह दुबारा लगाया कि इस से इस देश के लोगों को फ़ायदा प्राप्त हो। और यहां ग्वेटामाला में भी बिलकुल ऐसे ही होगा। इंशाअल्लाह यह इस क़ौम की सेवा का अन्त नहीं बल्कि आरम्भ है। निसन्देह मेरी दुआ है और मुझे उम्मीद है कि यह हस्पताल इन्सानी फ़लाह तथा भलाई के बहुत से मन्सूबों में से पहला मन्सूबा साबित होगा जो हम दुनिया के इस हिस्सा में शुरू करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरी दुआ है कि हम हमेशा अपने इन्सानियत की सेवा के फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी को अदा करने के लिए अपनी कोशिशों को बढ़ाते चले जाएं । मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इस हस्पताल को हर लिहाज़ से बरकतों वाले फ़रमाए और उसे ज़्यादा से ज़्यादा तरक्कियां देता चला जाए और यह हस्पताल इन्सानियत की सेवा की एक रोशन उदाहरण बन जाए। मेरी दुआ है कि यह हस्पताल मरीज़ों को हर मुमकिन ईलाज उपलब्ध करे और यहां पर काम करने वाले डाक्टर और काम करने वाले लोगों को विशेष रूप से ग़रीब और महरूम वर्ग को आराम पहुंचाने के लिए अनथक मेहनत करें। अल्लाह तआला डाक्टरों और अन्य मैडीकल स्टाफ़ की कोशिशों में बरकत डाले और अपने फ़ज़ल से उनके हाथ में मरीज़ों के लिए शिफ़ा रख दे। मेरी दुआ है कि इस हस्पताल की इंतिज़ामीया हस्पताल को इस तरह चलाए कि ऐसे ग़रीब लोग जो ईलाज करवाने की ताक़त नहीं रखते उन्हें निहायत सस्ता और जिस हद तक मुम्किन हो मुफ़्त ईलाज मुहय्या किया जाए। इस हस्पताल का नाम नासिर हस्पताल रखा गया है। नासिर का अर्थ ही दूसरों को सहारा देने वाला और दूसरों की मदद करने वाला के हैं। अत: मेरी दुआ है कि यह हस्पताल हमेशा और हर रंग में अपने नाम की लाज रखने वाला हो। मेरी दुआ है कि यह एक ऐसी नुमायां संस्था की हैसियत प्राप्त कर ले जो अपने बुलंद स्तर और सबसे बढ़कर समाज के लाचार लोगों की मदद करने के पुराज़म इरादा की वजह से जाना जाए ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आख़िर पर मैं दुआ करता हूँ कि सारे लोग क़ौम, नस्ल और मज़हब से उच्च होकर मानव जाति की सेवा के लिए इकट्ठे हो जाएं और समाज की फ़लाह तथा भलाई के लिए आपसी सहयोग और प्यार मुहब्बत के भावना से काम करें । इस दौर में दुनिया एक ग्लोबल विलेज बन चुकी है जैसा कि हर क़ौम एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई है और सम्पर्क के साधन प्रत्येक समय मुहय्या हैं। अत: अब पहले से बढ़कर मानव जाति का फ़र्ज़ है कि वे सारी क़ौमों और सारी धर्मों में आपसी भाईचारा तथा मुहब्बत को बढ़ावा दें। लेकिन अफ़सोस से कहना पड़ता है कि कड़वी हक़ीक़त यही है कि हम अपने प्यार तथा मुहब्बत के स्तरों को ऊंचा करने की बजाय इसके विपरीत कर रहे हैं और ख़ुदग़रज़ी, लालच और अंहकार का माहौल सारे समाज पर ग़ालिब आ रहा है। अत: मेरी दिली दुआ है कि इन्सान लालच और ख़ुदग़रज़ी को तर्क कर दे और उसकी बजाय मानव जाति की हिफ़ाज़त करने का महत्व और अल्लाह तआला की सृष्टि के साथ प्यार, मुहब्बत और हमदर्दी करने के महत्व को जान ले। मेरी दुआ है कि इन्सानियत की सेवा का भावना हमेशा के लिए समाज में जड़ पकड़ जाए ताकि हम अपने भविष्य को महफ़ूज़ कर सकें और अपने पीछे अपने बच्चों और आने वाली नस्लों के रहने के लिए एक बेहतर दुनिया छोड़ कर जाएं। अल्लाह तआला हम सबको अपनी अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए । आमीन ।

इन शब्दों के साथ में एक बार फिर सारे मेहमानों का आज इस आयोजन में शामिल होने पर शुक्रिया अदा करता हूँ। बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर का ख़िताब पाँच बज कर बाईस मिनट तक जारी रहा। इस के आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई जिसमें वहां मौजूद विभिन्न धर्मों और वर्गों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमान अपने अपने तरीक़ पर शामिल हुए।

आज की इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों में छ: सौ के लगभग मर्दों और लगभग दो सौ औरतें शामिल हुईं। कुछ सम्मान्नीय मेहमानों का ज़िक्र पहले हो चुका है। इसके अतिरिक्त बहुत से डाक्टरों, वकीलों, स्थानीय बिज़नस मैन, मीडिया के इदारों के विभिन्न प्रतिनिधि, हुकूमत के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों शामिल हुए। इन सभी मेहमानों की इस अवसर पर खाने का प्रबन्ध किया गया।

रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के स्पेनिश ऐडीशन का आरम्भ

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एक कान्फ्रैंस

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 26 September 2019 Issue No. 39

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रुम में तशरीफ़ ले आए जो एक छोटे साइज़ की मार्की लगाकर तय्यार किया गया था। यहां प्रैस कान्फ्रैंस का आयोजन भी हुआ। सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस बरकतों वाले अवसर पर रिसाला रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के स्पेनिश संख्या का नियमित आरम्भ फ़रमाया।

23 अक्तूबर 2018 ई का दिन हिस्पानवी दुनिया की इतिहास के बारे में से एक मील का पत्थर की हैसियत रखता है। जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ की स्पेनिश वेबसाइट और स्पेनिश संख्या का उद्घाटन किया। अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस महान रिसाला और इस की वेबसाइट के द्वारा अहमदियत का पैग़ाम लाखों और करोड़ों स्पेनिश लोगों के घरों तक पहुँचेगा।

रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ वह बरकतों वाला रिसाला है जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने 1902 ई में मग़रबी दुनिया को इस्लाम की ख़ूबसूरत और वास्तविक शिक्षा से परचिय करवाने के लिए जारी फ़रमाया।

10 जून 2018 ई को हुज़ूर अनवर ने रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के विभाग को मुलाक़ात के दौरान यह हिदायत फ़रमाई कि अब आपको शीघ्र स्पेनिश ऐडीशन की ज़रूरत पड़ेगी। क्योंकि स्पेन की आबादी 46 मिलियन है और इसी तरह अमरीका और लातीनी अमरीका के देशों में 400 मिलियन से अधिक आबादी स्पेनिश ज़बान बोलती है। बाद में हुज़ूर अनवर ने अताउल मुनिम तारिक़ साहिब (इंचार्ज मर्कज़ी स्पेनिश डैसक स्पेन) को इस रिसाला का चीफ़ ऐडीटर और आदरणीया मारिया आइज़ाबील लू सॉसरना साहिबा को (जिनका सम्बन्ध स्पेन से है और यू.के में निवास है) इस रिसाला का डिप्टी ऐडीटर और आदरणीय फ़ाइज़ अहमद साहिब ग्वेटामाला को इस रिसाला का कोवारडी नीटर मुक़र्रर फ़रमाया। इसी तरह हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि स्पेनिश संख्या का आरम्भ ग्वेटामाला में नासिर हस्पताल की उद्घाटन आयोजन के साथ होगा।

नासिर हस्पताल का उद्घाटन आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ प्रैस मार्की मैं तशरीफ़ लाए और लॉन्च का बटन दबा कर स्पेनिश रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के ऑनलाइन ऐडीशन का आरम्भ फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई थी कि रिसाला रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ का जो पहला शुमारा स्पेनिश ज़बान में प्रकाशति हो वह इन्सानियत की सेवा पर आधारित इस्लामी शिक्षाओं पर होना चाहिए। अत: इसके अनुसार यह पहला रिसाला प्रकाशित हुआ है और इन्सानियत की सेवा के बारे में से नासिर हस्पताल ग्वेटामाला को भी कवरेज दी गई है।

प्रैस कान्फ्रैंस

इस प्रोग्राम के बाद प्रैस कान्फ्रैंस शुरू हुई। इस अवसर पर निम्नलिखित इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि मौजूद थे।

* Channel 7से तीन पत्रकार और प्रतिनिधि
* Prensa Libre से दो पत्रकार
*Guatevision से एक प्रतिनिधि
*Nuestro Diarioसे एक प्रतिनिधि *Diario De Centro America से एक प्रतिनिधि
*और Revista Summa का प्रतिनिधि।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि हस्पताल जैसा प्रोजेक्ट और इलाक़ों में भी बनाएंगे? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आपने मेरा सम्बोधन सुना होगा। अभी तो आरम्भ है, अन्त नहीं है। हम भविष्य में और भी रफ़ाह आम्मा के काम करेंगे। मेरे सम्बोधन में आपके सवाल का सारा जवाब आ गया है।

*इस्लामी शिक्षा के सम्बन्ध में एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस्लामी शिक्षा वह है जो क़ुरआन करीम ने बताई है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुकरण से करके दिखाया है और बताया है। मैंने इसी इस्लाम का अपने सम्बोधन में बताया था। कोई और इस्लाम नहीं था। असल इस्लाम यही है वह नहीं है जो मीडिया वाले पेश करते हैं या कुछ इंतहापसंद ग्रुप पेश करते हैं। हम इस्लाम की वास्तविक शिक्षा दुनिया में फैला रहे हैं। इस को देखकर लाखों लोग इस्लाम में शामिल होते हैं।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि ग्वेटामाला में हैल्थ कैअर प्राब्लम है, ईलाज की कमी है। क्या आप इसी स्तर के हस्पताल दूसरे इलाक़ों में भी खोलेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इतने बड़े पैमाने पर तो नहीं हो सकता कि दूसरे इलाक़ों में हस्पताल खोलें। हाँ जिस तरह हमने अफ़्रीक़ा के विभिन्न इलाक़ों में क्लीनिक खोले हैं और ईलाज की बुनियादी सहूलतें मुहय्या की हैं। बाद में धीरे-धीरे फिर वे बड़े हस्पताल बने। इस तरीका पर हालात के अनुसार और अधिक क्लीनिक शुरू किए जा सकते हैं।

*इक्वाडोर देश के एक पत्रकार ने सवाल किया कि हस्पताल के स्थापना के लिए यह जगह क्यों चुनी गई है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमारे अपने संसाधन हैं। हमने अपने संसाधन में रह कर फ़ैसला करना होता है। प्राय शहरों के लोगों को सहूलतें मिल जाती हैं और दूसरे क्षेत्र के लोगों को सहूलतें कम होती हैं। हमारा मक़सद सेवा करना है, पैसा कमाना नहीं। हम अपने रिसोर्सज़ के अंदर रहते हुए जहां मुनासिब ज़रूरत होती है वहां हस्पताल बनाते हैं।

*एक पत्रकार ने निवेदन किया कि मैं पेरागोवा (Paraguay) से हूँ। वहां जमाअत तरक़्क़ी कर रही है। अब तक तीस लोग अहमदी हो चुके हैं। जमाअत के फैलने और जमाअत की तरक़्क़ी के बारे में हुज़ूर अनवर का क्या ख़्याल है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हम एक मज़हबी जमाअत हैं। मज़हबी जमाअतें धीरे-धीरे तरक़्क़ी करती हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक छोटे से क्षेत्र में मसीह तथा महदी होने का दावा किया था। फिर आपका पैग़ाम बाहर निकला और सैंकड़ों लोगों ने आपको क़बूल किया। फिर क़बूल करने वालों की संख्या हज़ारों में, लाखों में चली गई और संख्या में निरन्तर इज़ाफ़ा हो रहा है। आज हम दुनिया के 212 देशों में हैं और हर साल लाखों लोग जमाअत में शामिल होते हैं। इसी तरह पेरागोवा में भी हम पैग़ाम पहुंचा रहे हैं जो इस पैग़ाम को पसंद करते हैं वे क़बूल करते हैं। कुछ विरोधी भी हैं लेकिन हमारा पैग़ाम दिलों को छू रहा है। दिलों में उतरता है और लोग क़बूल करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमें उम्मीद है कि पेरागोवा के लोगों को हमारा पैग़ाम अच्छा लगेगा और वे मान लेंगे। उनकी आइन्दा नस्लें मान लेंगी। हम अपने पैग़ाम को छोड़ने वाले नहीं। हस्पताल की स्थापना और यह मानव सेवा का काम इसलिए नहीं कि लोग इस्लाम क़बूल करें। यह तो सिर्फ इन्सानियत की सेवा के लिए है। ग्वेटामाला के लोग हों, पेरागोवा के हों या बेलीज़ के हों, चाहे वे इस्लाम क़बूल करें या ना करें, हम अपना तब्लीग़ी काम करते रहेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तीस की संख्या अभी थोड़ी है। ये बढ़ेंगे। जब कादियान के गांव में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया तो ना कोई संसाधन थे, ना रेल थी, ना कोई और माध्यम थे उस के बावजूद आप की ज़िन्दगी में आप को क़बूल करने वालों की संख्या चार लाख तक पहुंच गई। आज 212 देशों में यह संख्या मिलियनज़ तक पहुंच गई है और निरन्तर इज़ाफ़ा हो रहा है। तो मज़हबी जमाअतें इस तरह फैला करती हैं। इस तरह इंशा अल्लाह पेरागोवा में भी होगा। धीरे-धीरे संख्या बढ़ेगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ईसाईयत के दुनिया में नफ़ुज़ को तीन सौ साल से ज़्यादा समय लगा था। जमाअत अहमदिया के संस्थापक अहमदिया हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि मैं मसीह अलैहिस्सलाम के क़दमों पर आया हूँ। तीन सौ साल का समय नहीं गुज़रेगा कि दुनिया में अधिकतर जमाअत अहमदिया की होगी और इस इस्लाम को क़बूल करने वाली होगी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्तविक इस्लाम है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर एक शख़्स मल्टी पिलाई हो के करोड़ों में चला गया तो उन तीस में से प्रत्येक भी मल्टी पिलाई हो कर हज़ारों, लाखों में चले जाऐंगे। इंशाअल्लाह।

यह प्रैस कान्फ्रैंस छ: बजकर पच्चीस मिनट पर ख़त्म हुई।

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad